शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 21 | उदयपुर मंगलवार 15 नवंबर 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

एक अभूतपूर्व पहल काले धन के खिलाफ

-विकल्प मेहता-

8 नवम्बर का दिन विश्व के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज होगा। जहां एक तरफ सबसे पुराना लोकतान्त्रिक देश अपना अगला राष्ट्रपति चुनने के लिए तैयार था वहीं सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश भारत भ्रष्टाचार व काले धन के खिलाफ एक नई जंग छेड़ने का एलान कर चुका था।

प्रधानंत्री नरेंद्र मोदी की 500 एवं 1000 के नोट बंद करने की पहल अपने आप में काफी साहसपूर्ण व हिम्मत दर्शाने वाली है। काले धन के खिलाफ इस तरह की पहल भारतीय इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव लाएगी इसमें कोई दो राय और सन्देह नहीं है।

आलोचकों के मुह बंद हैं क्योंकि मोदी सरकार के ऊपर काले धन के मुद्दे को लेकर पिछले एक अरसे से काफी दबाव बनाया जा रहा था। तत्कालीन सरकार ने इसके हेतु कुछ कोशिशें भी की थीं पर वे सब नाकाम साबित हुईं। अगर इस पूरे घटना क्रम को ध्यानपूर्वक समझा जाए तो यह कहना आसान होगा कि प्रधानमंत्री ने एक तीर से काफी निशाने लगाने की कोशिश की है।

साल भर पहले जन-धन योजना में ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के खाते खोले गए ताकि जिन लोगों के पास बैंकिंग सुविधा उपलब्ध नहीं थी वे लोग अपने 500 व 1000 के नोट बैंक में जमा करा क्रय शक्ति का संचन कर सकें। इस निर्णय से सबसे ज़्यादा परेशानी उन लोगों को होगी जिनका बैंक खाता नहीं है। इससे ना केवल बैंकिंग का उपयोग बढ़ेगा बल्कि बैंकिंग सुविधा से ज़्यादा से ज़्यादा लोग लाभान्वित होंगे।

काले धन का सबसे ज़्यादा दुरुपयोग चुनावी दिनों में होता है या यूं भी कह सकते हैं कि चुनाव ही कहीं न कहीं काले धन को पैदा करने का एक प्रमुख स्रोत है। प्रधानमंत्री की यह पहल 2017 के उत्तरप्रदेश के चुनावों का रुख ज़रूर मोड़ेगी। सपा व कांग्रेस के लिए यह निर्णय एक खतरे की घंटी बन के आया है क्योंकि अब चुनावी खर्चो को उठाने में तकलीफ होगी।

देश में चल रही महंगाई को भी यह निर्णय सफलतापूर्वक कम करेगा। गरीबों को अब खाने-पीने की वस्तुओं पर कम खर्च करना पड़ेगा और जमीनी लेन-देन भी जो कुछ समय पहले तक आकाश की ऊंचाइयों को छू रहा था, अब एक सामान्य स्तर पर आ जाएगा। कुल मिला के एक आभासी मंदी के दौर पर लगाम ज़रूर लगेगी।

नए नोटों से भ्रष्टाचार पर रोक लगेगी क्योंकि अब अत्यधिक मुद्रा का लेन-देन सरकार की नजर में रहेगा। नए नोटों में बैठाये गए जीपीएस चिप से मुद्रा संग्रहण कठिन होता जाएगा। इससे जमीन के 10 फ़ीट अंदर तक पड़े नोटों का पता लगा पायेगा।

भारत जैसे देश में जहा टैक्स चुराना आम बात है, वहाँ यह निर्णय कहीं न कहीं टैक्स चुकाने के लिए लोगों को प्रतिबद्ध करेगा। उम्मीद है कि भारतीय अर्थव्यवस्था को यह निर्णय एक सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। जिस समस्या को ख़त्म करने का यह निर्णय लिया गया है उससे पूरे विश्व- पटल पर भारत की लोकतान्त्रिक छवि की पारदर्शिता परवान चढ़ेगी।

क्या चीनी उत्पादों पर पाबन्दी सम्भव है?

-प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत-

इस वैश्वीकरण के युग में जो व्यवसायी कुशलतापूर्वक टिकाऊ एवं सस्ती वस्तुओं का उत्पादन करेगा उसका व्यापार बढ़ेगा तथा निर्यात भी होगा। उपभोक्ता को तो सस्ती एवं गुणवत्तापूर्ण टिकाऊ वस्तु चाहिये। उसे इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसका उत्पादन भारत कर रहा है या चीन। हमारे देश में लिनोवा का कम्प्यूटर, आईफोन चीन से आ रहा है। जो लोग चीनी वस्तुओं के बहिष्कार की बात कर रहे हैं वे स्वयं इन उत्पादों का प्रयोग कर रहे हैं। यदि हम भी कम लागत पर गुणवत्तापूर्ण उत्पादन करने में सफल होंगे तो चीनी उत्पादों का स्वयमेव ही बहिष्कार हो जायेगा।

भारत में विश्व की एक तिहाई गरीब जनता निवास करती है। श्रम ब्यूरो के प्रतिवेदन के अनुसार यहां 66.3 प्रतिशत परिवारों का औसत मासिक वेतन 20,000 रु. से कम है। ऐसी स्थिति में यहां वस्तु की लागत उस वस्तु को खरीदने के निर्णय में महत्वपूर्ण कारक होती है। देश में कई जगह चाइना बाजार फैल रहा है। वे जिस मूल्य पर विविध उत्पाद बेच रहे हैं वह अकल्पनीय है। सच यह भी है कि अभी हम इस स्थिति में भी नहीं हैं कि चीन से कम लागत के उत्पाद यहां तैयार कर सकें।

सरकार 'मेक इन इण्डिया' का नारा लगाकर उद्योगपतियों को निमन्त्रण दे रही कि वे भारत में निवेश करें। यदि हम चीनी वस्तुओं पर प्रतिबन्ध की बात करते हैं तो हमारी कथनी एवं करनी में फर्क आयेगा जिससे विश्व में हमारी साख पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। चीन आज विश्व की तीसरी सबसे बड़ी शक्ति है। वहां की हुवाई कम्पनी भारत में फ्रेक्ट्री लगा रही है। इससे यहां के श्रमिकों का कौशल बढ़ेगा और उन्हें रोजगार के पर्याप्त अवसर मिलेंगे।

यदि सरकार चाहती है कि भारतीय लघु उद्योग समाप्त न हों तो चीन किसी क्षेत्र में किसी उत्पाद पर डम्पींग कर रहा है जिससे उस उत्पाद की निर्माण क्षमता भारत में समाप्त हो रही है तो वह अनफेयर ट्रेड का मुद्दा उठाकर चीन पर नकेल कस सकता है।

वर्तमान हालात में भारत सरकार के पास चीनी वस्तुओं पर पाबंदी लगाने का विकल्प नहीं है। अत: सरकार को चाहिये कि स्वदेशी जागरण मंच, बाबा रामदेव आदि से संवाद स्थापित कर परिस्थितियों पर नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश करे अन्यथा देश में अस्थिरता का माहौल पैदा होगा परिणामस्वरूप विदेशी निवेश पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। सच यह भी है कि आज भी भारत में व्यवसाय करने के लिए अनुकूल परिस्थितियां नहीं हैं। विश्व बैंक द्वारा आसान व्यापार पर जारी ताजा रिपोर्ट में हमारा स्थान 190 देशों में 130 वें स्थान पर है। जिसे हम आर्थिक गुलामी कह रहे हैं उसे व्यापार की भाषा में परस्पर निर्भरता कहते हैं। भारत इस वैश्वीकरण के युग में अपने चारों तरफ दीवार खड़ी नहीं कर सकता और ऐसा भी संभव नहीं है कि हर भारतीय हर आवश्यक वस्तुएं स्वदेशी जागरण मंच या बाबा रामदेव से ही खरीदें।

सात पीढ़ी से गंगा-कावड़ की रामफेरी

22 अक्टूबर ऐन सुबह साढ़ा चार बजे मैं सोता हुआ अचानक जाग उठ बाहर देखा, एक पुरूष और महिला बड़े ही मर्मस्पर्शी स्वर में गाते, पूरी बस्ती को

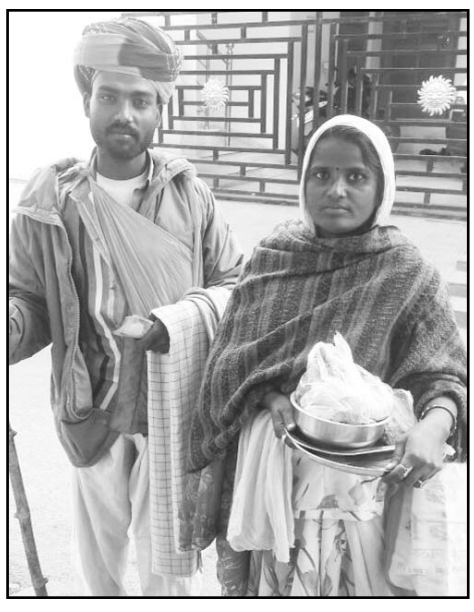

जगाते धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। पहला स्वर पुरूष का था। ठीक उसके बाद वही स्वर औरत उठाती। वे थोड़ी देर बाद दूसरी गली और फिर तीसरी गली का फेरा लगाते ओझल हो गये। उनकी आवाज धीरे-धीरे मंद हो गई।

कोई दो घंटे बाद वे पुन: उसी स्वर में गाते मेरी गली में द्वारे-द्वारे, किंचित खड़े रहकर घरधनी से इच्छा-दान प्राप्त करते हैं। अपने द्वार पर पाकर मैं बड़ा उल्लसित होता हूं और पूछ बैठता हूं। पुरूष अपना नाम देवाराम भाट बताता है और महिला देवाराम की बहिन मथुराबाई के रूप मे अपना परिचय देती है। कहती है कि हम पिछली सात पीढ़ी से गंगा की कावड़ बांचने का काम करते हैं। वर्ष में चार माह यही काम करते हैं। एकबार गंगामाई के दर्शनार्थ जाते हैं। परिवार हमारा सर्वप्रकारेण संपन्न है पर गंगामाई के प्रति अटूट आस्था होने से फेरी लगाते हैं। यजमानों के घर भी जाते हैं। संपन्न लोग अच्छी बख्शीश देते हैं। खेत, कुए, ऊंट, घोड़ा, बैल तक देते हैं। पहले पीतल के बर्तन अधिक देते थे अब पीतल का वापरवा नहीं होने से स्टील के बर्तन देते हैं।

देवाराम मात्र 24 वर्ष के हैं पर अधिक उम्र के पके हुए जवान लगते हैं। घाणेराव सादड़ी से पाली जाती सड़क पर ओम बन्ना का देवस्थल है। उसके पास ही भाटों की कोलोनी में मड़िया रोड़ पर रहते हैं। ओम बन्ना का स्थान मैंने भी देखा है। एक मोटर साइकिल खड़ी है। वही देवस्थान है। उसी को देवरूप में जनमान्यता प्राप्त है।

देवाराम बताते हैं कि अब तो वह स्थान बहुत दर्शनीय बना दिया गया है। मोटर साइकिल एक कांच के सुंदर पिटारे में बंद कर रखी हुई है। वर्ष में एकबार उस पिटारे से निकल स्वत: ही चलकर ओम बन्ना के घर पहुंच पुन: अपने स्थान पर लौट आती है। अलौकिक चमत्कार की वजह से उस स्थान और ओम बन्ना के प्रति लोगों की आस्था बढ़ती जा रही है। प्रतिदिन ही मेले सी भीड़ रहती है।

मैं उन्हें पुन: गंगामाई की कावड़ पर ले आता हूं। कहता हूं, कावड़ कहां है? बिना कावड़ गंगामाई की कावड़ कैसे फेर रहे हो? देवाराम कहता है, कावड़ तो घर ही रखी हुई बहुत पुरानी है। हम लोग बही भी रखते हैं। पुरानी बहियों में जैसी जो अपने पुरखों की जानकारी चाहे, हमारे पास लिखित है।

मैं सवाल करता हूं, कावड़ बांचनेवाले कावड़िया भाट तो केवल कावड़ बांचते हैं। देवाराम बताते हैं, हम लोग भाट राव हैं। हमारे पास दोनों चीजें हैं और लोगों के नाम भी हम कावड़ में जोड़ते रहते हैं। मैं अधिक सवाल नहीं करता हूं पर मैंने कहा कि कावड़ और बहियों पर मैंने बहुत लिखा है और अनेक कावड़ियों और बहीवाचकों से भेंट की है। वे मुझे भी अचरज भरी निगाहों से देखते हैं। मथुराबाई को हमारी बातों में विशेष दिलचस्पी लगती है। मैं उनके कुछ बोल लिपिबद्ध करता हूं और उनका मोबाइल फोटो उनकी रजामंदी से खुशी-खुशी लेता हूं। गंगामाई की कावड़ के बोल हैं-

बारा मीना में लागी ओ टेर
दूध पूत री बंधजो पोत
गाम ठाकरां रो मोटो ए नाम
धरम करोनी गंगा रे ओ तीर
रामधरम रा लीधा है जी नाम
जाग-जाग धरती असमान
उठोनी ए बेना ओढ़ो नी ए चीर
धरम करो नी ए गंगा रे तीर

वे मुझे कह जाते हैं, दीवाली के कुछ दिन बाद तक वे उदयपुर में ही रहेंगे तब मिलेंगे और मेरी लिखी कावड़ पुस्तक तथा हो सके तो कावड़ की चाचना करेंगे। -म. भा.

स्मृतियों के शिखर (20) : डॉ. महेन्द्र भानावत

डॉ. प्रभाकर माचवे ने मेरी कविताओं की पगड़ी बंधाई की

डॉ. प्रभाकर माचवे के नहीं रहने पर मेरी वही स्थिति हुई जो डॉ. श्याम परमार के नहीं रहने पर माचवेजी की हुई थी। अपने 31 दिसंबर 1977 के पोस्टकार्ड में डॉ. माचवे ने मुझे लिखा था- 'डॉ. श्याम परमार गुजर गए। बड़े दुख में हूं। उन पर लिखिए।'

समय व्यतीत होते कोई देर नहीं लगती। माचवेजी को जब याद करता हूं, पिछले बीस वर्ष का लम्बा समय चित्रपट की भांति नयनोन्मुख हो उठता है। मैं उन्हें अपना हर प्रकाशन भेजता और तत्काल उनका पोस्टकार्ड पाता। पोथी जैसी उनको लगती, अपनी दिल्लगी सहित प्रतिक्रिया लिख भेजते। मैं उनका हर छपा हुआ लेखन पढ़ता और कभी-कभी उन्हें उसके संबंध में लिखता भी। जब मैंने अपनी कविता पुस्तक 'कोई-कोई औरत' मुद्रण के लिए प्रेस में देने की बात लिखी, तो तत्काल कलकत्ता से 30.11.1972 को उन्होंने लिखा-

प्रिय भाई,

25.11.1972 के पत्र को पढ़कर खुशी हुई। मेरी प्रतिक्रिया- 'कोई-कोई औरत' / हजार पा जाती है / कोई-कोई क्वांरी ही रह जाती है / अपना-अपना भाग्य है! औरत का क्या मूल्य? उसके आगे देवता भी प्रार्थी हैं!! (लक्ष्मीजी का जानते हो कौन साथी है?)

बाद में तो उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका भी लिख भेजी। भेजते समय चिट्ठी में उन्होंने मुझे लिखा कि इसका 'जो चाहे शीर्षक लगा दें' सो मैंने इसी शीर्षक से वह भूमिका छपने भेज दी। दो पृष्ठ की इस भूमिका के अंत में उन्होंने जो लिखा उसी से उनकी मेरे प्रति दिल्लगी, स्नेहमय आत्मीयता और उनके निजी स्वभाव की उत्फुल्लता भी देखने को मिलती है।

उन्होंने कलकत्ता से 9.9.1980 को अपने पत्र में लिखा - ''बड़ी अच्छी शुरूआत है। महेन्द्र ने लिखा कि मैं इन कविताओं की 'पगड़ी बंधाई' करूं। अजी साहब, यह जमाना अच्छों-अच्छों की पगड़ी उछालने का है। पगड़ी आजकल पहनता ही कौन है। नयी पीढ़ी तो नंगे सिर है और ज्यादह सिरफिरे नौजवान हुए तो सिर पर कफन बांधकर घूमते हैं। तो यह काम तो अपने बस का है नहीं। न खुद कभी पगड़ी बांधी, न बंधवाई, न बांधना आई दूसरे के सिर पर। सो 'पगड़ी बदल' भाई, इस मामले में, बनने से रहे।

दूसरी ओपमा उन्होंने दी कि उनके 'कवि-नाविक को काव्य-समंद में उतार दूं'। 'पीछोला' के पास रहनेवाले महेन्द्र भाई को समंदर की खूब सूझी। 'नावक के तीर' तो उनके पास हैं ही। हम इस मामले में भी अनाड़ी हैं। न नाव चलानी आती है न बहुत गहरे पानी- समुंदर आदि में तैरना। समुद्र दर्शन बहुत किया है। पानी के अनंत रूप देखे हैं। हिन्दी में तो 'ठहरा हुआ पानी' और 'पानी की पुकार' से लगाकर 'समुद्र गाथा' तक पच्चीसों पानीदार संग्रह हैं। अब 'आप' ही बताये कि मुझ में वह पानी कहां जो इस सारी पनियल बाढ़ में कहीं ऊपर से बरसनेवाली 'दो बूंद' के लिए सबको लालायित कर दे। पर कवि शायद यही करता है। वह कहावत है- पत्थर को पिघला सकता है। ऐसी वाणी इस मरुस्थल के यात्री को मिले, यही आशीर्वाद दे सकता हूं। भानावत का 'भणिति' 'सुरसरि सम सब कहं हित होई' बने। यही शुभकामना।''

डॉ. माचवे 74 वर्ष के होने पर भी कभी पुराने नहीं हुए। वाणी, व्यवहार, व्याख्यान सभी दृष्टियों से वे बड़े तरोताजा और दिलदार ही बने रहे। उनका यशस्वी चित्त अपनी प्राचीनता को भी सदैव आधुनिक ही किए रहा। विषाद के क्षणों में भी वे ठहाके ही लगाते रहे। उनके ठहाके एक ठसकदार ठाठ लिए होते जो साहित्य और संस्कृति का हास देते हुए अपनी छोटी सी बैठक को भी बड़ी महफिल में मजे से बांध लेते।

मुझे लिखे उनके कई खतों में केवल एक खत उनके चिंता-मन का है। यह पत्र दिल्ली से सात दिसंबर सतहत्तर का लिखा हुआ है-

प्रिय मित्र,

पत्र मिला। मैं इस समय काफी चिंता में हूं। शिमला में आधा सामान पड़ा है। यहां दिल्ली में अपने मकान में बेटी-जमाई के पास आया हूं। पच्चीस-छब्बीस को हरिद्वार जाना है (षष्ठिपूर्ति) फिर बेटे के पास मुम्बई में। उसका पता बदल गया है सो नया लिखने को समय, मानसिक शांति नहीं।

सस्नेह / प्रभाकर माचवे

भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता में जब वे निदेशक थे, तब मुझे 1983 में भागीरथ कानोड़िया लोकसाहित्य व्याख्यानमाला के अंतर्गत राजस्थानी लोकगीतों पर व्याख्यान के लिए बुलाया और चेकोस्लोवाकिया के हिन्दी के विद्वान चेलिशेव से मिलाया जिन्होंने बाद में इस व्याख्यानमाला की अध्यक्षता भी की। यहीं माचवेजी ने मुझे लोकसाहित्य की वे कुछ पुस्तकें भी दीं जो उनकी निजी भेंट में आई हुई थीं। कहा - 'मेरे से अधिक उपयोगी ये आपके लिए हैं।'

राजस्थान और राजस्थानी के प्रति उनका विशेष आकर्षण और लगाव था। सन् 1971 में मेरे संपादन में प्रकाशित देवीलाल सामर अभिनंदन ग्रंथ 'गेहरो फूल गुलाब रो' के लिए उनसे लेख चाहा तो उन्होंने 'राजस्थान से प्रजास्थान तक' शीर्षक से बड़ा ही रंगदार लेख भेजा। यह लेख इस ग्रंथ का पहला लेख बना और बड़ा चर्चित रहा। इस लेख के प्रारंभ में उन्होंने आजादी से पूर्व राजस्थान के सामंती परिवेश का चित्रण किया। यथा -

''सफेद टोपियां इस्त्रीदार झकाझक, ऊंगलियों में अंगुठियां, गले में सोने की चैन, दाढ़ी मूंछ सफाचट, चमकदार चर्बीदार चेहरे, तुंदिल-तनु, शब्द-शूर, आश्वासन प्रचूर, अक्रियावादी, मक्खीचूस, बर्मा या बंगाल में बनिज से खूब कमाकर 'देस' लौटने वाले अपरिवर्तित व्यापारी, बड़े नेताओं की ऊपर से नकल करनेवाले छुटभैया नेता-नैतिन, छोटे-छोटे अखबारों के अल्पजीवी सम्पादक, छोटे-छोटे आंदोलनों के कागजी घोड़े दौड़ानेवाले मुहर्रिर और मुदर्रिस..., बात-बात पर विदेशी 'कोटेशन' फैंकनेवाले लेक्चररी आलोचक..., बहुत कम साधना, बहुत अधिक डींगें हांकना..., मीराबाई के भजन सुब्बुलक्ष्मी के मुंह से..., राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में भी मानव स्वरूपधारी कठपुतलियां..., घणी खम्मा अन्दाता के नए-नए राष्ट्रभाषा खड़ी बोली या रंगरेज रूप..., सब तरह के नये रूपों में सामंती पैटर्न, वही पुन: फन उठाती हुई राजभक्ति, वही उसे बीन पर नचाते हुए पत्रकार-गारुड़ी, वही जहर, वही 'सांप ने छोड़ी ने कांचली'..., रोटियों की मांग पर लाठियां, नौकरियों की मांग पर आंसू गैस....।

ऐसे चित्र मन में उभरते हैं कि खिन्नता और खेद, ग्लानि और लज्जा बढ़ती है। हमारे ही लोग और ऐसा पिछड़ापन, ऐसा काला सोना, ऐसी दल बदल वाली राजनैतिक दलदल, ये साहित्यिक संकीर्णताएं और ऐसा सुरुचि का अभाव? आखिर क्यों और बक तक?'' लेकिन उसके बाद आजाद हुए राजस्थान का चित्रण करते हुए लिखा-

''पुराने सामंती संस्कार 'नानारूपाय, नानावेशाय' फिर उभर कर आते रहते हैं। वे जीवनपोषी नहीं, जीवनशोषी तत्व हैं। लोकसाहित्य, लोककला, लोकभाषा की सुरक्षा के नाम पर कभी-कभी वे ही तत्व उभर आते हैं और ऐसी लड़ाइयां सुनने को मिलती हैं कि हाड़ौती में लोकसाहित्य श्रेष्ठ है या मारवाड़ी में, मेवाती में या जैसलमेरी में? कई बोलियां उपेक्षित पड़ी हैं। इन अहल्याओं को, शिलीभूत संवेदनाओं को कौनसे राम का पद-स्पर्श मिलेगा और कब? आजकल के राम तो पंचवटी पसंद नहीं करते और न वन की ओर प्रस्थान करना उन्हें भाता है। सात समुन्दर पार से इटावली और अंग्रेज भाषा शास्त्री और इतिहासकार दुर्धर मरुप्रदेश में आकर अनाल्स और व्याकरण लिखते-बनाते रहे अनाम अजानी भाषाओं के, और हम हैं कि हमारे पास इतना कुछ मूल्यवान है और वह भी बिखर रहा है, पर हम उसकी चिंता नहीं करते। हमें कौनसा सांप सूंघ गया है?''

15 नवम्बर 1979 को मैंने पाक्षिक 'पीछोला' का प्रकाशन शुरू किया। इसमें प्रकाशनार्थ मैंने 'मेरा जीवन मेरी जबानी' स्तंभ के लिए माचवे साहब से पांच सौ शब्दों का आलेख मांगा। चार दिसंबर को मुझे उन्होंने यह आलेख भेजा भी, पर पीछोला के कुल पन्द्रह ही अंक दे पाया जिससे उनका आलेख कुंवारा ही रह गया। इसमें उन्होंने अपने बारे में संक्षिप्त जानकारी लिख भेजी जो आज भी मेरे संग्रह में मूल्यवान बनी हुई है। वह जानकारी इस प्रकार थी -

जन्म दिवस :

26.12.1917

प्रेरक प्रसंग :

(1) महात्मा गांधी के दर्शन और सान्निध्य में सन् 1939 से 1942 तक सेवाग्राम में बिताए दिन।

(2) गांधीजी की सबसे बड़ी कृपा 8 नवंबर 1940 को उन्हीं की कुटी के पीछे, उन्हीं की प्रेरणा और मार्गदर्शन में, उन्हीं के आश्रम में पालिता कन्या कु. शरद पारनेकर के साथ मेरा विवाह।

(3) प. जवाहरलाल नेहरू और डॉ. राधाकृष्णन् द्वारा इस विवाह की संस्तुति।

(4) सन् 1964 में लालबहादुर शास्त्री द्वारा मेरी केन्द्रीय संघ लोकसेवा आयोग, नई दिल्ली में विशेष अधिकारी के नाते नियुक्ति।

(5) साहित्यकारों में अनेक महान लेखकों की मुझ पर कृपा रही। उनमें प्रमुख हैं जो अब नहीं रहे- राहुल सांकृत्यायन, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', प्रेमंचद, माखनलाल चतुर्वेदी, गुप्तबंधु, मामा वरेरकर आदि।

कष्टकारी क्षण :

(1) दो छोटे बच्चों की मृत्यु 1943-47 के बीच।

(2) मां की मृत्यु 1953 में।

(3) आरंभिक आर्थिक कष्ट, जिसमें मैंने बी.ए., एम.ए. और पेंटिंग में डिप्लोमा की पढ़ाई की।

(4) साहित्य क्षेत्र में भी अनेक क्षुद्रों द्वारा विरोध।

(5) अरसिकेसु कवित्व निवेदनम् जैसे जीवन में अगणित प्रसंग आये।

(6) अनेक अकृतज्ञों से विश्वासघात हुआ।

(7) रूस में स्वर्गीय राहुलजी की पत्नी लोला और पुत्र होगर से मिला।

(8) जब किसी पढ़े-लिखे हिन्दी भाषी को, जो अपने को साहित्यप्रेमी और साहित्यज्ञाता मानता है, अपना परिचय देना पड़े।

उपलब्धियां :

(1) साहित्यरत्न में सर्वोत्तम अंक निबंध में, (1936) में।

(2) एम.ए. में प्रथम स्थान, दर्शन में (1937)में।

(3) सोवियत लैंड पुरस्कार- 'टाल्स्टाय और भारत' अनुवाद पर 1972 में।

(4) 30-40-50 उपन्यास और 'रूस में' पुस्तक पर उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान के दो छोटे पुरस्कार।

(5) अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज के न्यूयार्क अधिवेशन में 1960 में प्रेमंचद पर भाषण।

(6) जर्मनी में छपी दो किताबें - 'नयी कविता' और मराठी में 'कवि और कविता' में मेरी कविता का प्रकाशन।

(7) सोवियत एनसाइक्लोपीडिया में भारतीय साहित्य पर कई वर्षों तक लेखन।

(8) जापान के 'सर्वोदय' नामक पत्र में 'गांधी और भारतीय साहित्य' पर प्रकाशित मेरा लेख।

(9) बीस विश्वविद्यालयों में पीएच.डी. परीक्षक गाइड आदि।

भावी दिशाकल्प :

भावी है मायावी / कौन जानता है? किस क्षण सुरसा मौत निगल ले / झेलम, सतलज किधर रह गई रावी! मैं नहीं नजूबी या कि ज्योतिषी / नहीं भविष्यत् की इन हाथों चाभी! (चलता है बस नित्य परिश्रम / पढ़ना-लिखना अविश्रांत क्रम...) / कुछ कर गुजर हूं.../ आशा दिल दिमाग पर हावी / भावी है मायावी।

सस्नेह- प्रभाकर माचवे।

अप्रैल 1989 में राजस्थान साहित्य अकादमी ने अपने वार्षिक समारोह में माचवेजी को आमंत्रित किया तब उनसे बड़ी आत्मीयतापूर्ण भेंट हुई। तब वे इदौर से प्रकाशित दैनिक 'चौथा संसार' के संपादक थे।

(शेष पृष्ठ सात पर)

सद्य प्रकाशित

एक स्मित, एक मुस्कराहट चेहरे पर लाइये और मोलेला की मिट्टी को माथे पर लगाइये शायद आपके ललाट के लेख सुगंधित हो जायें

-बालकवि बैरागी

मेरी प्रसन्नता तो यह है कि मैंने मोलेला की मूर्तियों के शून्य से लेकर शिखर होते काल को देखा है। यह पुस्तक कहानी के साथ मेरी तरंग यात्रा और उसकी अन्तरंग यात्रा का दर्शाव है।

-डॉ. महेन्द्र भानावत

आर्यावृत्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, मूल्य 250 रूपये। लेखिका राजकीय मीरां कन्या महाविद्यालय उदयपुर में चित्रकला की व्याख्याता है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

खिलौनों की तरह तबलों से खेलता प्रांशु

-डॉ. तुकक भानावत-

तीन साल की उम्र से ही प्रांशु ने खिलौने की बजाय तबलों से खेलना शुरू कर दिया था। सात वर्ष तक की उम्र होते-होते वह प्रतिदिन पांच घण्टे तक रियाज करने लग गया था। सर्वप्रथम अमेरिका में उसका कार्यक्रम रखा गया। सर्वाधिक श्रेय और उपलब्धि उसे उदयपुर के सिटी पेलेस में दिये गए 30 मार्च 2002 के कार्यक्रम में मिली। उसके हाथों में मिठास है। बोलों की सफाई और लयकारी का उसे अच्छा ज्ञान है।

प्रांशु का यह सौभाग्य है कि उसने अब तक पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पं. शिवकुमार शर्मा, उस्ताद अमज़द अली खां, पं. रानू मजूमदार, राहुल शर्मा, कद्री गोपालनाथ, शूबेन्द्रो राय, उस्ताद सुजात हुसैन खां, गुंदेचा बन्धु, राजन साजन मिश्रा, श्रीमती शासकीया राव दी हास जैसे दिग्गज संगीतज्ञों के सम्मुख विशिष्ट आयोजनों में तबला वादन कर उनका आशीर्वाद लिया और श्रोताओं की वाहवाही से अपना आत्म संबल सार्थक किया। तबला वादन में रेले, परन, गत, कायदे, पेशकार, टुकड़े आदि की विशेष बजावट से यह लगता है कि मां के पेट से ही यह सब सीख आया है।

उदयपुर के शिल्पग्राम में 'स्मृतियां' कार्यक्रम में प्रांशु का तबला वादन सुन विश्वविख्यात शास्त्रीय गायक पं. जसराज ने कहा था कि तबला वादन में प्रांशु ने जो कमाल हासिल किया उससे लगता है कि आगे जाकर यह अपने दादा पं. चतुरलालजी की आत्म-छवि को रोशन करेगा। प्रांशु के पिता पं. चरनजीत ने बताया कि तीन साल की उम्र से ही प्रांशु ने खिलौने की बजाय तबलों से खेलना शुरू कर दिया था। उसमें मुझे मेरे पिताश्री चतुरलालजी की छवि दिखाई दी कारण कि वह उनके अंग में आत्मरत हुए पेशकार और भिन्न-भिन्न प्रकार के कायदे तथा रेले प्रस्तुत करने लग गया। पिताश्री की तीस्र जाति में प्रांशु ने अपनी काबलियत बड़े सुथरे रूप में प्रस्तुत की है और उसका दायां-बायां का वजन भी बड़ा लाजवाब है। और तो और उसका मन तबला वादन में इतना रम जाता है कि उसे भूख-प्यास तक की याद नहीं रहती।

प्रांशु की दिलचस्पी, निष्ठा और ललक ने ही उसे इस मंजिल तक पहुंचाया। सात वर्ष तक की उम्र होते-होते वह प्रतिदिन पांच घण्टे तक रियाज करने लग गया था तब लगा कि वह अपनी उम्र से अधिक तबला वादन में पारंगत हो गया है और बेहिचक कहीं भी अपनी प्रस्तुति दे सकता है। सर्वप्रथम अमेरिका में उसका कार्यक्रम रखा गया। जब वह आठ वर्ष का था। यह कार्यक्रम आशातीत सफल रहा और उसी के परिणामस्वरूप दूसरे वर्ष जर्मनी में उसका कार्यक्रम आयोजित किया गया। फिर तो उसका हौंसला बढ़ता गया। श्रोताओं का रूझान और तालियों की बौछारों का ही कमाल रहा कि प्रांशु की दिलचस्पी समग्रत: स्वत: ही तबला वादन में बढ़ती गई। मुम्बई और दिल्ली जैसे शहरों में प्रांशु ने बड़ी सफलता और नामवरी अर्जित की किन्तु सर्वाधिक श्रेय और उपलब्धि उसे उदयपुर के सिटी पेलेस में दिये गए 30 मार्च 2002 के कार्यक्रम में मिली। उसके हाथों में मिठास है। बोलों की सफाई और लयकारी का उसे अच्छा ज्ञान है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का यह रेखाचित्र बैंगलोर निवासी सी. लक्ष्मीनारायण द्वारा बनाया गया है। 20 अक्टूबर 2016 को जब डॉ. भानावत उदयपुर स्थित सांस्कृतिक स्त्रोत शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र में व्याख्यान देने गये तो उसी दौरान यह चित्र बनाकर उन्हें भेंट किया गया।

उल्लेखनीय है कि सांस्कृतिक स्तोत के इस केन्द्र से डॉ. भानावत दो दशक पूर्व उसके स्थापना काल से जुड़े हुए हैं। देश के विभिन्न अंचलों के शिक्षक यहां अल्पकालीन प्रशिक्षण के लिए आते हैं।

ऐसा पहले भी हुआ जब शिक्षकों द्वारा डॉ. भानावत को उनके व्याख्यान के तत्काल पश्चात उनकी चित्राकृति भेंट की गई।

शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित डी. रामचन्द्रन

शिक्षक दिवस पर चैन्नई में राज्य के शिक्षामंत्री पंडिया राजन से तमिलनाडु सरकार द्वारा प्रदत्त डॉ. राधाकृष्णन पुरस्कार प्राप्त करते डी. रामचन्द्रन एम. ए. बी. एड.।

उल्लेखनीय है कि श्री रामचन्द्रन भारत सरकार द्वारा संचालित सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र के उदयपुर स्थित क्षेत्रीय केन्द्र में 28 अगस्त से 23 सितम्बर 2008 तक प्रशिक्षणार्थ आये थे जहां उन्होंने डॉ. महेन्द्र भानावत का व्याख्यान सुना था। श्री रामचन्द्रन एन एल पी स्कूल, केट्टी पलाड़ा, नीलगीरीस में प्रधानाध्यापक हैं।

प्रदर्शनधर्मी लोककलाओं को प्रयोगधर्मी बनायें

मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय के दृश्य कला विभाग द्वारा भारतीय समकालीन चित्रकला एवं हिन्दी साहित्य : अन्त: सम्बन्ध विषयक आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार के मध्य दिवस 8 नवम्बर को लोकसाहित्य एवं संस्कृति के सरोकार विषय पर बीज वक्तव्य देते डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि आजादी के बाद हमारे देश के विभिन्न अंचलों में जो लोकधर्मी प्रदर्शनकारी कलाएं थीं, वे सब संकटग्रस्त हो गईं। ग्रामीणजनों और कलाकारों की मनस्थिति के बदलते परम्पराशील कलाशिल्पियों एवं कलाकारों की आजीविका तक के लाले पड़ गये। कई शिल्प निर्माण बन्द हो गये। कला-समाजों ने नई रोशनी एवं नई हवा की प्रभा में अपनी पारम्परिक धरोहर तक को त्याग दिया।

डॉ. भानावत ने कहा कि सन् 1965 में मैंने जब गवरी को पीएच.डी. शोध का विषय बनाया तब ही गमेती पंचायत ने छपा हुआ परचा निकाल समाज को सचेत कर दिया कि कोई गवरी नहीं नाचेगा। यह पिछड़ेपन की निशानी है। जो गवरी लेगा उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जायेगा। ऐसे ही पड़ चितेरों ने पड़ बनाना बन्द कर दिया। कठपुतली कलाकारों ने कठपुतली को तिलांजलि दे दी। कावड़ वाचकों ने अपनी कावड़ें घरों में कैद कर दीं। भवाइयों, रावलों ने अपने ख्याल प्रदर्शन बन्द कर दिये। बहुरुपियों ने स्वांग लाना त्याग दिया लेकिन भारतीय लोककला मण्डल द्वारा उसके संचालक देवीलाल सामर तथा उनके सहयोगी के रूप में मैंने सम्बन्धित कलाकारों से निरन्तर सम्पर्क रखते हुए इन कलाओं का महत्व प्रतिपादित किया।

इसके अलावा कला मण्डल द्वारा लोक कलाकारों के प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। लोकगीतों के आयोजनों, लोकानुरंजन के मेलों, कठपुतलियों के समारोहों तथा लोककलाओं की विविधरूपा संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं का आयोजन कर इन कला-रूपों को प्रयोगधर्मी परम्पराशील बनाकर इनके बिगड़ते-बिखरते स्वरूपों का संरक्षण किया। आज जब निगाह डालते हैं तो वे सारी विधाएं मृतप्राय होने से बची हुई हैं। पड़ कला तथा कठपुतली कला तो पूरे विश्व में ख्यात हो गई है। विश्वविद्यालयों में लोककलाओं के विविध पक्षों पर शोधकार्य हो रहे हैं और विदेशी विद्वान इनके प्रति आकर्षित होकर अपने-अपने रंग-ढंग से कार्य कर रहे हैं। परिणामस्वरूप खड़ताल वादक सिद्दीक, पड़ चितेरे श्रीलाल जोशी, मांडगायिका अल्लाजिलाईबाई, मोलेला के मृण-मूर्ति शिल्पकार मोहनलाल कुम्हार को पद्मश्री मिलना प्रांत का गौरववर्धन है।

इसलिए निरन्तर सकारात्मक सोच रखते हुए इन पर शोध एवं प्रयोगधर्मी बने रहने की आवश्यकता है। बदलते समय, संदर्भ और सोच में ये कलाएं अपनी आंचलिकता की कंचुकी से बाहर निकल अंतर्राष्ट्रीय हद की ओर कदम रख रही हैं। ऐसी स्थिति में इनमें अपनी जमीन की सौंधी गंध सुवासित होती रहे, इस ओर हमें अधिक सजग होगा पड़ेगा।

डॉ. भानावत ने कहा कि प्रदर्शनधर्मी लोककलाएं यदि लोक निष्णातों के हाथों प्रयोगधर्मी बनी रहें तो उन्हें मरणधर्मीता से बचाई जा सकती हैं। मेलोंठेलों तथा लोक उमड़ाव के स्थानों पर जो फुटपाथी साहित्य छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित मिलता है, वे ग्राम्यजीवी लेखकों की धरोहर होती हुई भी मंचन के दौरान पूर्णत: लोकजुड़ाव लिए शोभित होती फुटपाथी साहित्य की लोकश्री को छविमान करती परिलक्षित होती हैं। चित्रकला विभाग द्वारा पहलीबार हिन्दी साहित्य के अन्त: सम्बन्धों से जुड़ा कन्द्रीय विषय रखने पर सभी ने अध्यक्ष प्रो. हेमन्त द्विवेदी की प्रशंसा की।

टाटा बिल्डिंग ने शुरू की देश की सबसे बड़ी स्कूल निबंध प्रतियोगिता

उदयपुर। टाटा समूह ने 11वीं टाटा बिल्डिंग इंडिया स्कूल निबंध प्रतियोगिता शुरू करने की घोषणा की है जो भारत की सबसे बड़ी स्कूली स्तर की निबंध प्रतियोगिता है। इस प्रतियोगिता का दायरा इस साल 200 शहरों के 8500 से ज्यादा स्कूलों के 40 लाख छात्रों तक होगा। सीनियर वाइस प्रेसीडेंट- कार्पोरेट मामले, ग्रुप कार्पोरेट कम्युनिकेशंस, टाटा सर्विसेज अतुल अग्रवाल ने कहा कि प्रतियोगिता की शुरूआत वर्ष 2006 में अंग्रेजी भाषा की निबंध प्रतियोगिता के तौर पर की गई थी। उन्होंने कहा कि टाटा बिल्डिंग इंडिया स्कूल निबंध प्रतियोगिता 2016-17 प्रतिभागी स्कूलों में दो चरणों में आयोजित की जाने वाली गतिविधि होगी। अंग्रेज़ी संस्करण में करीब 72 शहरों के लगभग 2,500 अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों की भागीदारी होगी जबकि हिंदी प्रतियोगिता उत्तर एवं मध्य भारत के 58 शहरों के 2000 स्कूलों में आयोजित की जाएगी। अन्य राज्यों में संबंधित प्रादेषिक भाषाओं में प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा और ऐसी प्रत्येक भाषा की प्रतियोगिता 300 से 500 स्कूलों में करायी जाएगी। प्रतियोगिता में बच्चों को निबंध सिर्फ एक बार लिखना होगा है जबकि उसका मूल्यांकन तीन स्तरों स्कूली, शहरी एवं राष्ट्रीय स्तर पर किया जाएगा। प्रत्येक स्तर के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा और शहरी स्तर के विजेताओं तथा राष्ट्रीय स्तर के विजेताओं को सम्मानित करने के लिए विशेष अभिनंदन समारोह आयोजित किए जाएंगे। स्कूली स्तर के विजेताओं को पुरस्कारस्वरूप प्रमाणपत्र, पदक और विशेष टाटा बिल्डिंग इंडिया मर्चेंडाइज़ दिए जाएंगे। शहरी स्तर के विजेताओं और उप-विजेताओं को कैमरे, ब्लूटूथ स्पीकर, प्रमाणपत्र और ट्रॉफियां प्रदान की जाएंगी। नेशनल लैवल के विजेताओं को लैपटॉप दिए जाएंगे। राष्ट्रीय स्तर के विजेताओं और उप-विजेताओं को नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन का दौरा कराया जाएगा और किसी राष्ट्रीय स्तर की विशिष्ट हस्ती जैसे भारत के राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति से मुलाकात का भी अवसर मिलेगा।

गीत मेरे सुनो

सुनो मेरे मीत
तुम बिन मेरा जीवन
है कल्पनाओं से परे .....
ज्यों शब्द बिना अर्थों के
ज्यों फूल बिना खुशबू के
ज्यों सावन बिना बादल के
तुमसे ही है मेरी जिन्दगी की
सारी सलामतें, नेमतें, अमानतें
तुमसे अलग ना कोई पहचान है
और ना ही इस जीवन में कोई जान है
एक तुम हो तो हर खुशी का इन्तजार
मेरी सुबहों में मेरी शामों में
मेरी नींदों में, मेरे ख्वाबों में
तुम्हारी ही खुशबू का अहसास
जानते हो मीत,
तुम्हारे नाम की मैंने ली है
इतनी बलाइयां
जितने लगे नहीं होंगे
तुम्हारे माथे पर नजर के टीके
तुम्हारी मौजूदगी का एहसास
ज्यों सांसों के चलने,
पुतलियों के झपकने
और सम्पूर्ण स्नायु तंत्र की
शिराओं के बहते लहू से होता है
किसी के जीवन का आधार तय
मेरे जीवन के आधार हो तुम
तुम अपनी सारी परेशानिया
और गम मुझे देकर ब्रेफिक्र हो जाओ
और हो सके तो
ले लो मेरी सारी मुस्कराहटें
और बदले में दे दें
मुझे अपनी सारी मायूसियां
मेरी आंच तुम्हारी जंजीर नहीं बनेगा
वो तुमरी विजय यात्रा की
दिगदिंगत पताका हैं।

-ज्योति शर्मा

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 नवंबर 2016

सम्पादकीय

दरिद्रा देवी का अनुष्ठान

भारत देश जैसा कोई दूसरा देश नहीं जिससे इसकी तुलकी की जा सके। इसलिए कवियों ने उपमा भी उसी से दी- 'बस भारत के सम भारत है।' विश्व गुरु ही जब इसे मान लिया तो और कुछ कहने को बचता ही नहीं है। इन सबके मूल में धार्मिकता का बोलबाला है। भारत का अस्तित्व ही उसके धर्मजीवी होने में है। यह धर्मजीविता देवी-देवताओं से जुड़ी हुई है। वे ही हमारे संस्कारों में, समाज में, सरोकारों तथा सोपानों में विद्यमान हैं।

उनकी अलौकिक शक्तियों, चमत्कारों, कार्य सिद्धियों, मनौतियों से हम अचरज में रहते हैं। पुनर्जन्म तथा पूर्वजन्म के चक्र-व्यवहारों से हमारा जीवन पलित-पोषित तथा फलित है। पग-पग पर पूजा, उपासना, अनुष्ठानपरक वार-त्यौहार-उत्सव आदि से हम सराबोर होते, उनकी महिमा का बखान करते बारम्बार वंदित एवं नमित होते हैं। उनकी स्तुतियों, स्मृतियों में अगणित किस्से, कहानी, भजन, सिलोके, मिथक, आख्यान, गीत, गाथा तथा प्रदर्शनकारी कलारूपों की बहार देखने को मिलती है। त्यौहारों में दीपावली का त्यौहार सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। धनतेरस से प्रारंभ हुआ यह त्यौहार रूप चौदस, दीवाली, खेंकरा और भाईदूज की पंच-लड़ी से शोभित है। मूलत: दीवाली पर्यावरणीय शुद्धता का, अन्तर-बाह्य पवित्रता, साफ-सफाई एवं स्वच्छता का त्यौहार है। लक्ष्मी की आराधना के रूप में धनधान्य वृद्धि, अंधकार के रूप में नकारात्मक शक्तियों का दमन-शमन तथा सुख-समृद्धि एवं सकारात्मक रूप-वैभव के आगमन का आमंत्रण है।

देवी-देवताओं, पितरो-पूर्वजों की आराधना-पूजा के साथ-साथ जो अमंगल, दारिद्र, कचरा, कबाड़ा के रूप में आलतू-फालतू अस्वीकार्य चीजें हैं उनको भी सम्मान के साथ विसर्जन के रूप में गृह-लक्ष्मियां दीवाली के ठीक दूसरे दिन ऐन सुबह विशिष्ट संस्कार के साथ विदाई की रस्म करती हैं। ऐसी स्थिति में पूरे घर को बुहार जो कचरा शेष रह जाता है उसका दरिद्रा के रूप में एक निश्चित स्थान पर विसर्जन कर जलता दीपक रख लौटती हैं। इस समय वे मन ही मन 'कचरो-कचरो अठेई रीजो ने लछमी-लछमी घर आवजो' अर्थात् कचरा-वचरा यहीं रहना और लक्ष्मी घर आना का उच्चारण करती भूंगली से थाली बजाती लौटती हैं।

दरअसल यह कचरा ही दरिद्रा देवी का प्रतीक है। यह दरिद्रा लक्ष्मी की बड़ी बहिन है। दोनों बहिनों के लिए रहने का कोई ठौर ठिकाना नहीं था सो दोनों विष्णु के पास गईं। विष्णु को दरिद्रा ने कहा कि उसकी पसंद एक ऐसा पति प्राप्त करने की है जो कभी पूजा-पाठ नहीं करता हो और उसे भी ऐसे स्थान पर रखें जहां कोई पूजा-पाठ नहीं करता हो। धरती पर ढूंढ़ने पर भी ऐसा स्थान कहां मिले जहां कोई धर्म-कार्य और पूजा-पाठ न होता हो। सो दरिद्रा इधर-उधर ठोकर खाती भटकती रहती है पर चूंकि लक्ष्मी की बड़ी बहिन है अत: लक्ष्मी के साथ उसका भी हमारे यहां मान-सम्मान का विधान है ताकि वर्ष में एकबार वह भी सबकी स्मृतियों में बनी रहे और रूठकर कोई अमंगल न करे।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' का प्रत्येक अंक मेरे लिए न केवल पठनीय अपितु संग्रहणीय भी बना हुआ है। इसकी प्रतीक्षा भी रहती है और जो भी मित्र आते हैं उनके लिए भी यह पठनीय बनता है। 'स्मृतियों के शिखर' स्तंभ में विशिष्ट धारा के जो विद्वान कलाकार साहित्यकार संत जन तथा लोक में रमेबसे विशिष्ट जन सम्मिलित हो रहे हैं उनके संबंध में जमीनी जानकारी पहलीबार ही पढ़ने को मिल रही है। जिस आत्मीयता और अपनत्व से उन पर अनुभवजनित आंख-दृष्टि से लिखा जा रहा है वह अद्‌भुत तथा अनोखी है। इस पत्र की खासियत यह भी है कि जो कुछ इसमें प्रकाशमान हो रहा है वह नई जमीन की तलाश करती आंचलिकता की गंध भरती भारतीयता की गूगल-धूप है। **-सिरेमल सेठिया, रतलाम**

'शब्द रंजन' अक्षरश: पढ़ता हूं। इसकी एक-एक पंक्ति स्वर्णाक्षरों से श्रृंगारित रहती है। कुछ सामग्री शोध प्रधान रहती है जो इतिहास-रस से लबालब भरी रहती है। साहित्यकारों या अन्य महान सज्जनों से आपका पत्राचार तो नव-नवोन्मेषकारी है जो साहित्यिक रुचि के पाठकों को अत्यन्त आंधे रखती है।-**अम्बू शर्मा, कोलकाता**

सर्प-दंश का ईलाज

पीपाड़ शहर के पीसी वर्मा ने बताया कि सर्प-दंश व्यक्ति का जहर उतारने के लिए पौन-पाव के अंतर से सरसों के तेल में प्याज का रस मिलाकर प्रति चालीस मिनिट में तीन-चार बार पिलाना चाहिए। नीम के कोमल पत्तों पर व्यक्ति को सुला दिया जाय। लहसुन बांटकर दंश-स्थल पर बांधने से भी जहर का असर धीरे-धीरे कम होता जाता है। जीवित चूहे को पकड़ चीरकर तत्काल बांध देने से भी जहर बाहर खींचा आता है। इस दौरान रोगी को नीम के पत्ते खिलाते देखते रहना चाहिए कि उसे आराम मिल रहा है या नहीं। यदि नीम के पत्ते मीठे लगे तो समझ लेना चाहिये कि जहर उतरा नहीं है। वर्मा ने बताया कि ईलाज कोई भी हो, रोगी को येनकेन प्रकारेण नींद नहीं आ पाये, इसका कठोरतापूर्वक ध्यान रखा जाना जरूरी है।

भीलों के गवरी अनुष्ठान में प्रयोगधर्मिता

-डॉ. कहानी भानावत-

राजस्थान के आदिवासियों में भील सर्वाधिक प्राचीन हैं। उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़ तथा सिरोही क्षेत्र में इनकी घनी बसावट है। इन्हीं भीलों में प्रचलित गवरी अत्यंत प्राचीन धार्मिक अनुष्ठान है। रक्षाबंधन के दूसरे दिन, ठंडी राखी, भाद्र कृष्णा एकम से प्रारंभ होकर लगभग सवा माह, चालीस दिन तक गवरी उत्सव आयोजित होता है। देवी गवरा के आशीर्वाद से गांव के लोग, प्राय: तीसरे वर्ष गवरी धारण करते हैं। इसका प्रदर्शन दिनभर गांव के किसी खुले स्थान तिराहे, चौराहे अथवा मंदिर-परिसर में होता है। भीली बहिन-बेटियां अपने गांव में गवरी दल को आमंत्रित करती हैं। प्रदर्शन का मुख्य प्रयोजन गांव में खुशहाली, सुकाल दर्शन, धन-धान्य वृद्धि, फसलों तथा जीव जगत की सुरक्षा तथा किसी प्रकार की आपदा से मुक्त रहने का है।

भीलों के आदिदेव-महादेव-शंकर तथा महादेवी पार्वती का गवरी के बहाने धरती पर आगमन होता है। पौराणिक आख्यानों तथा भीलों में प्रचलित लोककथाओ के अनुसार एकबार भस्मासुर ने अपनी कठोर तपस्या से शिव को प्रसन्न कर पार्वती को पाने की लालसा में वरदान के रूप में भस्मीकड़ा प्राप्त कर लिया और शिव को ही भस्म करना चाहा। ऐसी स्थिति में विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर भस्मासुर को ही भस्म कर दिया। भस्म होते भस्मासुर ने अंतिम इच्छा के रूप में महादेव के साथ मृत्युलोक में रमण करने का वरदान मांगा। गवरी उसी परम्परा का सशक्त जीवंत तथा देव-दानव एवं मानव का अद्‌भुत लीला-रूप है। इनके अलावा जलचर, थलचर तथा नभचर प्राणी मिलकर गवरी में अपने विविध स्वांग-स्वरूपों से दर्शक मंडल का खासा अनुरंजन किये रहते हैं।

गवरी के मुख्य पात्रों में बुड़िया जो शिव-भस्मासुर का मिलाजुला रूप लिये होता है। शक्ति-पार्वती स्वरूपा दो नायिकाएं जो राई कहलाती हैं। गवरा का मुख्य भोपा जिसमें खेल के दौरान देवी का भाव बना रहता है। सूत्रधार के रूप में कुटकड़िया जो अपनी कुटकड़ाई, हास्यप्रद रंजन के साथ प्रत्येक आने वाले स्वांग-सवरूप का परिचय देता है।

वादक के रूप में एक थाली बजाने वाला तथा दूसरा मांदल वादक मांदल्या होता है। मांदल्या बड़ा तांत्रिक होता है जो पूरी गवरी को बड़ी सावधानीपूर्वक अमंगल तथा अनिष्टकारकों से बचाये रखता है।

प्रत्येक खेल के प्रारंभ और समापन पर गवरी के सभी खिलाड़ी 'खेल्ये' गम्मत के रूप में घाई लेते हैं। यह गोलाई लिये होती है। इसमें सभी खेल्ये एक सी ताल, लय, थिरकन में सृष्टि-संचयन का बोध देते हैं। नायक बुड़िया घाई-घेरे के बाहर उल्टा, पाछपगे चलता थिरकता अपने गणों को नियंत्रित किये रहता है। सभी अभिनेता पुरूष ही होते हैं।

गवरी अपने प्रारंभिक रूप में नृत्य ही थी। इसकी प्रतीति आज भी 'गवरी नाच' सम्बोधन से मिलती है। आंचलिक भाषा में गवरी 'नाच' के रूप में ही रचीपची है। 'गवरी नाच री है।' 'गवरी रो नाच देखवा चालो।' 'गवरी घणी हाउ नाची।' 'गवरी रा नाच्या एक-ऊं-एक वदावदी रो खेल कीधो' अर्थात् गवरी नाच रही है। गवरी का नाच देखने चलो। गवरी बहुत अच्छी नाची। गवरी नाचनेवालों ने एक-से-एक बढ़चढ़ कर खेल किये। ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया, गवरी में एक-एक कर नाना स्वांग-खेल-तमाशे तथा लीला-रूप जुड़ते गये और उसने एक सशक्त नाट्यरूप का परिदर्शन धारण किया।

लोक का कोई भी स्वरूप हो, अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति से लोकरंजन का लोकप्रिय माध्यम बना होता है। वह सदैव ही परिवर्तनशील तथा प्रयोगधर्मी होता है। उसमें बदलाव प्रकृति स्वरूप है जिसे कोई चिन्हित नहीं कर सकता। जैसे नदी के बहते प्रवाह में वर्षा का जल बहता रहता है तब पता नहीं चलता कि कौनसा पानी कितना और किस रूप में नया या कि पुराना है।

गवरी प्रदर्शन में गणपत, भंवर्‌या, गोमा मीणा, कालू कीर, कानगूजरी, भिंयावड़, देवी अम्बाव, बणजारा, शिव-पार्वती, बादशाह की फौज, खेतुड़ी, शंकर्‌या, वाणिया, खड़ल्या भूत, कालबेलिया, नट जैसे दृश्य पौराणिक आख्यान, भीली जीवन, सामाजिक परिवेश, धार्मिक आस्था-विश्वास तथा समसामयिक राजनैतिक परिवेश के प्रतीक हैं। इनमें निहित अन्तर्कथाएं और उनसे जुड़े मिथक जीवन-संस्कृति, इतिहास तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़े पुरातन तथा मध्यकालीन इतिहास के उन संकेतों को भी परिदर्शित करते हैं जिनकी तह में जाकर कई नवीन अन्वेषण और उद्‌भावनाएं हाथ लगती हैं।

इस प्रकार सैकड़ों वर्षों से चली आ रही गवरी सदैव ही प्रयोगशील बनी हुई है। यह प्रयोग दो रूपों में मिलता है- (1) स्वत: स्फूर्त प्रयोग तथा (2) सोचबद्ध प्रयोग।

स्वत: स्फूर्त प्रयोग बिना पूर्वाभास, अभ्यास, सोच, समझ तथा प्रयोजन के अदृश्य संकेत-शक्ति रूप में स्वत: सहज होता है। अभिनेता के कौशल, प्रतिभा तथा कल्पना की उदात्तता इसमें रंग भरती है। यह सर्व स्वीकार्य, सर्वमान्य तथा सर्व ग्राह्य होता है। इसके लिए किसी मोतबीर, समाजश्रेष्ठी, राजाज्ञा, शासनादेश अथवा समाज की कोई भूमिका नहीं होती है। यह परंपराशील बन हस्तांतरित होता रहता है और धीरे-धीरे अनुष्ठानिक रूप ले लेता है।

सोचबद्ध प्रयोग पूर्व नियोजित, सोची-समझी-भूमिका लिए किसी दक्ष-कुशल व्यक्ति द्वारा होता है। यह किसी लक्ष्य तथा उद्‌देश्यपरक एवं व्यावसायिक दृष्टि लिये होता है। इसका लोकग्राह्य स्वरूप नहीं बनता और न लम्बे समय तक इसका असर बना रहता है।

वर्षों पूर्व, साठ के दशक में भारतीय लोककला मंडल में सर्वप्रथम देवीलाल सामर ने अपने कलाकारों द्वारा 'गवरी नृत्य' नाम से एक नृत्याधारित नाटिका तैयार की और उसके अखिल भारतीय प्रदर्शन दिये। भानू भारती ने 'अमर बीज' नाम से आदिवासी गवरी अभिनेताओं द्वारा ही गवरी को आधार बना प्रभावी प्रयोग किया। दूरदर्शन ने भी गवरी के नजदीक दर्शन दिये। कई अध्येताओं ने विविध कोणों से गवरी का अध्ययन किया। पहलीबार डॉ. महेन्द्र भानावत ने गवरी को शोधानुसंधान का विषय बना सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के प्रथम दीक्षांत समारोह, 1967 में पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। गवरी जब देखो तब ही हर वर्ष नये रूप में अपनी परम्पराशीलता का प्रदर्शन देती मिलती है।

पोथीखाना

परंपरा का लोक : लोकसाहित्य में बिना गांठ वाला गन्ना

- बालकवि बैरागी-

पुस्तक को मैं 'हिन्दी की गन्ना खेती में एक बिना गांठ वाला गन्ना' मानता हूं। पूरी पुस्तक सरस है। कहीं नीरसता नहीं। समझ नहीं पाता हूं कि इस पुस्तक को आप तक पहुंचाने का श्रेय किसे दूं। पुस्तक की लेखिका है पुणेश्वरी डॉ. श्रीमती मालती शर्मा और संपादक हैं भाई डॉ. महेन्द्र भानावत।

आप खूब जानते हैं कि गन्ने का रस मीठा होता है। आप यह भी जानते हैं कि शक्कर गन्ने से बनती है। यह तो आप जानते ही हैं कि गन्ना चूसा जाता है। गन्ना खाया भी जाता है और पीया भी जाता है। गन्ने की खेती से आप परिचित हैं, यह मेरा विश्वास है। कृपया कभी पूरा गन्ना हाथ में लेकर देखिये। प्रत्येक गन्ने की काया पर छोटी-बड़ी दूरी पर गांठें होती हैं। बिना गांठ वाला कोई गन्ना नहीं होता। गन्ने को सांठा भी कहते हैं। सच्चाई यह है कि गन्ने की पेरियां तो मीठी होती हैं, रसीली होती है पर उसकी गांठों में कोई मिठास नहीं होती। वे सरस और रसीली नहीं होतीं। अस्तु।

मेरे सामने साढ़े तीन सौ पृष्ठों की एक महत्वपूर्ण पुस्तक है- लोकसाहित्य के संदर्भ में 'परंपरा का लोक'। इस पुस्तक को मैं 'हिन्दी की गन्ना खेती में एक बिना गांठ वाला गन्ना' मानता हूं। पूरी पुस्तक सरस है। कहीं नीरसता नहीं। समझ नहीं पाता हूं कि इस पुस्तक को आप तक पहुंचाने का श्रेय किसे दूं। पुस्तक की लेखिका है पुणेश्वरी डॉ. श्रीमती मालती शर्मा और संपादक हैं भाई डॉ. महेन्द्र भानावत।

भारत के इतिहास में एक अत्यंत सक्रिय लोककला एवं लोकसाहित्य-

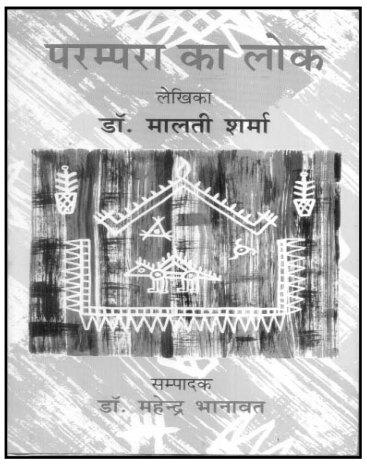

संस्कृति-संरक्षक संस्था थी जिसके संस्थापक रहे स्व. श्री देवीलाल सामर। उदयपुर की इस संस्था ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भरपूर यश लूटा। इस संस्था में अपनी स्वर्णिम आयु के सुवाकाल का सारा सोना स्वर्ण स्वाहा करने वाले लोक मनीषी का नाम है डॉ. महेन्द्र भानावत। संस्था की एक महत्वपूर्ण पत्रिका होती थी 'रंगायन'। डॉ. भानावत इसके यशस्वी संपादक रहे। 'रंगायन' में एक लेखिका अनायास प्रविष्ट हुई। नाम रहा श्रीमती मालती शर्मा। अब हैं डॉ. मालती शर्मा। डॉ. भानावत की दूरदर्शी कसौटी दृष्टि ने मालती शर्मा की कलम के भविष्य को खूब पहचाना। भारत के लोकसाहित्य और लोकजीवन पर मालती शर्मा ने जो भी अनुपम और अनन्य तथा अद्‌भुत सरस एवं प्रामाणिक लिखा उसे डॉ. भानावत ने 'रंगायन' में पूरे सम्मान से छापा और देखते-देखते मथुरा-वृंदावन-गोकुल और ब्रज की एक रसवंती कलम अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर प्रकट हो गई।

'रंगायन' में मालती के 34 लेख लोकजीवन और भारत की लोकप्रथा पर छपे। एक से एक सरस। एक से एक रसीले। एक से एक लौकिक किंतु अलौकिक। स्वयं डॉ. महेन्द्र भानावत के शब्दों में इन लेखों का विवेचन देखिये। वे लिखते हैं- जी हां इसी पुस्तक के पृष्ठ 9 पर दृष्टव्य है-

''मालतीजी द्वारा लिखित ये लेख किसी एक दिशा, एक दृष्टि, एक विषय, एक विन्यास, एक शिल्प, एक शैली, एक बोध, एक लोकाचार, एक विचार, एक मत, एक रंग, एक छवि, एक मंतव्य के सूचक नहीं हैं और न किसी एक ही लेखन-सांचे से आबद्ध हैं। सब अपने में अलग विविध हैं। अनूठे हैं। कहीं से भी अपनी यात्रा शुरू कर समाप्त कर देने वाले हैं। इन लेखों में साहित्य की सारी विधाओं का चखान मालतीजी के लेखन की एक बड़ी उपलब्धि कही जायेगी।''

आज की लेखनी, सिद्ध कवयित्री और लोक-लेखिका डॉ. मालती शर्मा के लिए इससे बड़ा 'प्रमाणपत्र' कौनसा लोकदेवता देगा। पिछले 50 वर्षों का लोकसाहित्य, श्रम और अध्ययन मालतीजी के आंचल में बंधा था। महेन्द्र भाई ने उस पर केसर छिड़क दी। 'रंगायन' की फाइलों को सम्हालना अपनी लोकरस की गन्ना खेती में बिना गांव का गन्ना उगाकर सुरक्षित रख लेना एक सुसंपादक का कमाल है।

आप इस पुस्तक का कोई भी पृष्ठ पढ़ना शुरू कर दीजिए, आप बंधे के बंध रह जायेंगे। यदि आप हजार-दो हजार, पांच हजार, दस हजार और लाख पचास हजार साल पहले के भारत की लोकसंस्कृति, भारत के लोकसाहित्य, भारत की श्लील-अश्लील लोक-गालियों और लोकसाहित्य से परिचित होना चाहते हैं तो इस पुस्तक को पढ़िये। बिना गांठ के इस गन्ने को चूसिये। पुस्तक में कुल 44 लोक आलेख हैं जिसमें 34 तो मात्र 'रंगायन' और डॉ. महेन्द्र भानावत की कृपा से ही हमारे सामने हैं।

लेखिका ने अपने जीवन के नेपथ्य को प्रकट किया है 'घट संचित बूंदों की कहानी में'। जरूर पढ़िये। क्या-क्या नहीं हुआ है? क्या-क्या नहीं सहा है और क्या-क्या नहीं किया है? स्वयं के नेपथ्य को प्रकट करने का एक बढ़िया मंच पुस्तक के संपादक ने अपनी रसवंती लेखिका को दिया है। लेखिका और संपादक साथ-साथ हैं कि आगे-पीछे। कौन कहां आगे है और कौन कहां पीछे, यह समझना बहुत मुश्किल है। इस बिंदु पर आप पढ़ते जाइये और खुद से लड़ते जाइये। बिना गांठों के इस गन्ने में मिठास के साथ-साथ केसर और कस्तूरी की गंध का अहसास भी आपको होगा। भारत के विविध अंचलों और विविध भाषाओं का कला लोक आपके सामने प्रकट हो जायेगा। यह वो गन्ना नहीं है जो आप किसी चरखी वाले को देकर रस निकलवालें और पीने की कोशिश करें। यह तो स्वयं ही चूसने और रस लेने वाला सांठा है। सचमुच हिन्दी इस 475 रूपया मूल्य वाले ग्रंथ पर आने वाले 500 सालों तक गर्व करें तो किसी को भी आश्चर्य नहीं होगा। पुस्तक की प्रकाशन संस्था आर्यावर्त संस्कृति संस्थान दिल्ली-110094 को बधाई। पुस्तक के संपादक डॉ. महेन्द्र भानावत का हार्दिक आभार। पुस्तक की लेखिका पुणेश्वरी श्रीमती डॉ. मालती शर्मा का अभिनंदन और पुस्तक के पाठकों को आत्मीय शुभकामनाएं।

कुंवारे देश के आदिवासी : समझदारी भरा प्रयास

-डॉ. नवलकिशोर-

राजस्थान के आदिवासियों में भील-मीणे ही सर्वाधिक चर्चित हैं, गरासिया आदि अपेक्षाकृत उपेक्षित रहे हैं। इसलिए गरासियों से संबंधित यह पुस्तक प्रदेश के आदिवासियों के सांस्कृतिक अध्ययन की दिशा में एक स्तुत्य प्रयास है। एक ऐसा प्रयास जो विशेषज्ञों के लिए आधारभूत सामग्री जुटाता है और सामान्य पाठकों के लिए मानवीय बंधुत्व का विस्तार करता है। लोक-संस्कृति का अध्ययन उनके लिए एक व्यावसायिक कर्म नहीं है। उसके प्रति जो उनमें गहरी आत्मीयता है, वह लेखन को मानवीय बंधुत्व की खोज से जोड़ देती है।

डॉ. महेन्द्र भानावत बहुमुखी प्रतिभा के लेखक हैं। कवि, कथाकार, निबंधाकार और पत्रकार हैं। राजस्थान के लोकसाहित्य और वहां की लोकसंस्कृति के शोधक के रूप में उनकी विशेष ख्याति है। इस क्षेत्र में अपने कार्य के लिए वे मान्य विद्वानों से प्रशंसित और अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं। उनके कार्य के महत्व के विषय में डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी के ये शब्द बहुत समीचीन हैं- ''डॉ. महेन्द्र भानावत को राजस्थान की लोकपरंपरा के अध्येता और व्याख्याता के रूप में उल्लेखनीय प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। उन्होंने जनमानस की मान्यताओं और जीवन-अभिव्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य में लीक से हटकर लोक की साधना का प्रयास किया है। इस साधना में उन्होंने न केवल अथक अध्यवसाय का परिचय दिया है बल्कि परंपराओं और मान्यताओं की जड़ तक पहुंचने की क्षमता भी अर्जित की है।'' लोकसंस्कृति साधक के रूप में डॉ. भानावत की प्रशंसा इसलिए भी की जानी चाहिए कि उन्होंने अपने अध्ययन को अधिकांश आम पाठक के लिए प्रस्तुत करते हुए लोकसंस्कृति की समृद्धि से उसे अवगत कराया है। इस संबंध में श्री नंद चतुर्वेदी ने उनके कार्य का सही मूल्यांकन किया है। वे लिखते हैं-

''महेन्द्र लोकसंस्कृति का विशेषज्ञ है, लेकिन उसकी चित्त रचना में विशेषज्ञता का कोई भाव नहीं है। लोकसंस्कृति से ओतप्रोत होने का भाव है। उसकी दृष्टि आम आदमियों को देखती है और उनके मन को, बड़प्पन को, याद रखने वाले कर्म और विशेषता को पाठकों तक पहुंचाती है।''

'कुंवारे देश के आदिवासी' राजस्थान की आदिवासी जनजाति 'गरासिया' के बारे में एक ऐसी परिचयात्मक पुस्तक है, जिसमें उनके जीवन के लगभग सभी पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। राजस्थान के आदिवासियों में भील-मीणे ही सर्वाधिक चर्चित हैं, गरासिया आदि अपेक्षाकृत उपेक्षित रहे हैं। इसलिए गरासियों से संबंधित यह पुस्तक प्रदेश के आदिवासियों के सांस्कृतिक अध्ययन की दिशा में एक स्तुत्य प्रयास है। एक ऐसा प्रयास जो विशेषज्ञों के लिए आधारभूत सामग्री जुटाता है और सामान्य पाठकों के लिए मानवीय बंधुत्व का विस्तार करता है।

आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल हम आदिवासियों को पिछड़ा समझते हैं और विकास के नाम पर उन्हें भी इस दौड़ में दाखिल होते देखना चाहते हैं। विकास की वर्तमान प्रक्रिया के बारे में जब आज हम स्वयं शंकाशील हो उठे हैं और अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं के मूल्यवान अंश का पुनरन्वेषण और संरक्षण चाहते हैं तब यही दृष्टि आदिवासी-संस्कृति को लेकर

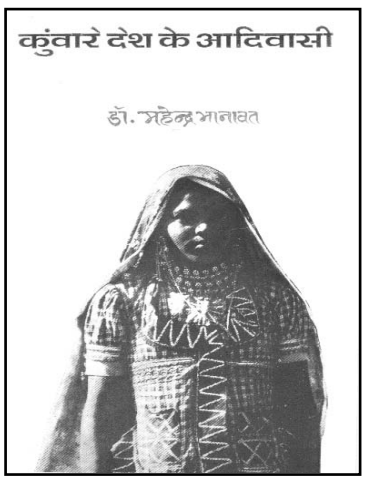

भी अपेक्षित है। आदिवासी युगों से तथाकथित सभ्य समाज के शोषण और उत्पीड़न के शिकार रहे हैं और इसलिए दरिद्रता और अज्ञान से अभिशापित भी रहे। इसके बावजूद उन्होंने अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को बचाए रखा है।

उनकी जीवन-पद्धति प्रकृति के साथ गहरे सामंजस्य से अनुप्रेरित रही है। उनकी इस जीवन-पद्धति में बहुत कुछ आज भी मूल्यवान है, न केवल उनके लिए अपितु सारे मानव समाज के लिए। आदिवासियों की संस्कृति के इस मूल्यवान दाय की खोज कुतूहली वृत्ति से नहीं, गहरी समझदारी से ही हो सकती है। जब महेन्द्र गरासियों के बारे में कहते हैं-

''इनका जीवन अजीब। इनकी मस्ती अजीब। इनके मेलेठेले अजीब। इनका घर-संसार अजीब। इनके रस्मोरिवाज अजीब। सबकुछ अजीब निराला अनूठा है।'' तो इन अजीब लोगों के लिए उनके मन में कौतुक का नहीं श्लाघा का भाव होता है। आत्मीयता के रिश्ते में बंधकर ही उन्होंने हमारे बीच रहते हुए किंतु हमसे कुछ अलग ढंग की जिंदगी जीने वाले इन गरासियों से निकट परिचय कराने का समझदारी भरा प्रयास किया है।

लगभग सौ पृष्ठों की यह पुस्तक 76 लेखों का संग्रह है जिसमें क्षेत्र और उत्पत्ति के परिचय से प्रारंभ कर लेखक गरासियों के विश्वासों, रीति-रिवाजों, संस्कारों, प्रथाओं, मेले-ठेलों, दंत-कथाओं की एक नई ही दुनिया में हमें ले जाता है और इस जनजाति में सामाजिक चेतना की जागृति तथा जन-आंदोलन में उनकी भागीदारी के वर्णनों से अपने वृतांत का उपसंहार करता है।

एक छोटी सी पुस्तक में अधिक से अधिक जानकारी देना लेखक का उद्‌देश्य रहा है। इस प्रक्रिया में पाठक को एक अधूरेपन की शिकायत होना स्वाभाविक है लेकिन इस शिकायत से अपेक्षाकृत एक नए विषय के अध्ययन की शुरूआत का महत्व कम नहीं होता।

इस नये अध्ययन की एक झलक यहां डॉ. भानावत के शब्दों में ही प्रस्तुत की जा रही है-

गरासियों की मुख्य बस्ती भाखर क्षेत्र में है। आबू पर्वत के पूर्व में जो पहाड़ियां फैली हुई हैं, उनमें चौईस गांव बसे हुए हैं। यह क्षेत्र भाखरपट्टा कहलाता है / गरासियों में सभी लोग नग्न शयन करते हैं। क्या पुरूष, क्या महिलाएं और क्या बच्चे-बच्ची सभी रात्रि को नग्न सोते / कोई गरासिया घर ऐसा नहीं होगा जिसमें तीर-कमान-छुरा-तलवार-कुल्हाड़ी-लाठी नहीं होगी। कोई भी गरासिया जब भी अपने घर से बाहर निकलेगा, अपने हथियार साथ लिए बगैर नहीं निकलेगा / यह सही है कि एक-एक गरासिया दो-दो, तीन-तीन महिलाए रखता है।

वह अपने खेत में अपनी औरतों को अलग-अलग हिस्सा दे देगा जिस पर वे मालकिन की तरह अधिकार समझेंगी। ऐसे ही उन्हें अलग-अलग रहने के लिए झोंपड़ी दे देगा। यों भी इस जाति में पुरूष प्राय: आलसी होता है। गरासियों की सामाजिक व्यवस्था ही ऐसी बनी हुई है कि कोई भी पुरूष अपनी विवाहिता को कष्ट नहीं दे सकता / कहते हैं, खाये बिना ये रह जायेंगे मगर पिए बिना नहीं रहेंगे। यह शराब प्रत्येक घर में मिलेगी। महुड़ों से शराब ये स्वयं ही निकालते हैं।

विधिवत विवाह में बहुत सारी राशि खर्च करनी पड़ती है, जो किसी गरासिया के बस की बात नहीं है इसीलिए इनमें प्रेम विवाह ही सर्वाधिक पाए जाते हैं। वर्तमान में अस्सी प्रतिशत से ऊपर गरासिया परिवार ऐसे हैं जो विधिवत विवाह-बंधन में नहीं बंधे हैं, परन्तु वे पूर्णत: विवाहित हैं और पारिवारिक हैं।

(शेष पृष्ठ सात पर)

डूम ने 200 शहरों में अपनी सेवाएं फैलाई

उदयपुर। भारत के अग्रणी ऑटोमोबाइल ऑनलाइन व्यवहार मंच डूम ने, अपनी सेवाओं का 200 शहरों में विस्तार करने की घोषणा की है। यह नवीनतम उपलब्धि, इसके परिचालन के शुरुआत के केवल 19 महीने में हासिल की है, जिसे काफी हद तक डूम के तकनीक आधारित मंच तक पूरा किया, जो देश भर में उपयोगकर्ताओं के लिए वाहनों को खरीदने-बेचने को अधिक पारदर्शी और सुविधाजनक बनाता है।

डूम के सह-संस्थापक और उपाध्यक्ष, व्यवसाय विकास, रिषभ मलिक ने कहा कि भारतीय ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में तकनीकी नवाचार के लिए व्यापक अवसर रहे हैं, जिसे डूम के द्वारा इसके शुरुआत से ही उपयोगकर्ता के आकर्षण और विकास के द्वारा भी देखा जा सकता है। हमारे अद्वितीय तकनीक केंद्रित दृष्टिकोण के बाद, हम मुख्य बाजार कमियों पर ध्यान दे रहे हैं और ऑटोमोबाइल खरीदने के अनुभव के और आसान और सुविधाप्रद बना रहे हैं। इसने हमें उपभोक्ता केंद्रित ब्रांड पेशकश को बनाने और डूम को भारत में नई और पुरानी कारों को खरीदने और बेचने का पसंदीदा गंतव्य स्थापित करने की अनुमति दी है। तकनीक पर ध्यान देने से, हमें हमारे कार्यों को मुख्यालय से समन्वय स्थापित करने को संभव बनाया है। वर्तमान में, ई-कॉमर्स उद्योग में हम अकेले ही ऐसे प्रतिद्वंद्वी है जिसने हायपर लोकल बाजार में किसी भी अन्य शहर में लोगों को रखे बिना इस प्रकार के पैमाने हासिल किए है। 200 शहरों में अपनी सेवा का विस्तार करने के बाद, अब हम देश भर में और अधिक बाजार और उपभोक्ताओं के लिए हमारी शानदार सेवाओं के लाभ का विस्तार करना चाहते है।

करीना कपूर और दीपिका पादुकोण की बड़ी जीत

उदयपुर। रिलायंस स्टुडियो, फिल्म सिटी में आयोजित लक्स गोल्डन रोज अवार्डस का प्रीमियर संस्करण दिलचस्प मनोरंजन के प्रदर्शन का गवाह बना। कार्यक्रम को शाहरूख खान, करन जौहर और अर्जुन कपूर ने होस्ट किया। सितारों जड़ित इस कार्यक्रम ने बॉलीवुड की कालातीत सुंदरियों के ग्रेस, स्टाइल और ग्लैमर को पहचान देते हुए जश्न मनाया। विभिन्न श्रेणियों में प्रत्याशियों को फिल्म उद्योग में स्थापित व्यक्तित्वों के पैनल द्वारा निर्धारित किया गया, जिसमें फाल्गुनी और शेन पीकॉक, मलाइका अरोड़ा खान, सुनिधि चौहान, मिकी कांट्रेक्टर, श्यामक डावर और नीता लुल्ला शामिल थे। कार्यक्रम में शर्मिला टैगोर को लेजेंड अवार्ड, पूजा हेगड़े ने साल की सर्वश्रेष्ठ डेब्यू अभिनेत्री, करीना कपूर ने साल का ग्लैमर डीवा अवार्ड, दीपिका पादुकोण ने आईकॉनिक लुक ऑफ द ईयर अवार्ड, कैटरीना कैफ साल की सबसे डिज़ाइरेबल डीवा, तापसी पन्नू ने साल का राइजिंग स्टार अवार्ड, आलिया भट्ट ने वर्ष का मोस्ट लवेबल कैरेक्टर अवार्ड, प्रियंका चोपड़ा ने साल का अंतरराष्ट्रीय फेस ऑफ द ईयर अवार्ड तथा अनुष्का शर्मा ने वुमेंस एसेंस अवार्ड जीता।

'चौखी पेट पूजा' का शुभारंभ

उदयपुर। उदयपुर में अधुनातन स्वादों को सुलभ कराने वाले नये केन्द्र 'चौखी पेट पूजा' फास्ट फूड सेन्टर का अशोक नगर में माया मिष्ठान के पास सोमवार को शुभारंभ हुआ। इसका शुभारंभ उदयपुर चेम्बर ऑफ कामर्स उदयपुर डिवीजन के अध्यक्ष पारस सिंघवी एवं अशोक नगर पार्षद श्रीमती नमिता टांक ने फीता काटकर किया। इस अवसर पर चौखी पेट पूजा के निदेशक अजय जैन के साथ सुरेन्द्र श्रीमाली, अशोक शाह, राजमल जैन, राजेन्द्रसिंह हिरन, मनीष श्रीमाली, बीएल चित्तौड़ा सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

चौखी पेट पूजा के निदेशक अजय जैन ने बताया कि उदयपुर में यह पहला केन्द्र है जहां यहां के निवासियों तथा देश-विदेश के पर्यटकों को उनकी रूचि के अनुसार मनभावन स्वादिष्ट फास्ट फूड हर समय सुलभ रहेंगे। इनमें शुद्ध मसालों से निर्मित वडापाव, दाबेली, सेंडवीच, पिज्जा, बर्गर, समोसा, कचोरी, पोहा, पांच-छह फ्लेवर वाली पानीपूरी, विभिन्न स्वाद वाली चाय आदि प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि चौखी से तात्पर्य व्यंजनों की शुद्धता, स्वास्थ्यवर्धकता तथा गुणवत्ता से है जिसका मेवाड़ी मनुहार की लोकप्रियता के साथ निर्वाह किया जायेगा। जैन के अनुसार उदयपुर में कम्पनी का यह पहला केन्द्र है। इसके बाद शीघ्र ही मुम्बई व गुवाहाटी में इसके केन्द्र प्रारम्भ किये जायेंगे। कालांतर में कम्पनी की योजना अपने ब्रांड 'चौखी पेट पूजा' को व्यवसाय के रूप में भारत के विभिन्न शहरों में प्रतिष्ठित करने की है।

पारस सिंघवी ने कहा कि विश्व में उदयपुर की बढ़ती शौहरत से यहां हर समय ही पर्यटकों की आवाजाही बनी रहती है। ऐसी स्थिति में स्वादिष्ठ व्यंजन के अलग से ऐसे केन्द्र की आवश्यकता महसूस की जाती रही थी। अजय जैन ने इस अभाव को महसूस किया और उदयपुर को एक नई सौगात दी जिसके लिये वे बधाई के प्रात्र है। अजय जैन ने पिछले दो महीनों में कुछ शहरों की छानबीन कर पता लगाया कि इस तरह का केन्द्र खोलने की कहां-कहां गुंजाइश है इसके लिए उन्होंने उदयपुर को पहली पसंद बनाया जो हमारे लिए गर्व की बात है।

चमकी, गुगली और ग्रोवर अब रेडियो पर

उदयपुर। सेस्मे वर्कशाप इंडिया (एसडब्ल्यूआई) और मेटलाइफ फाउंडेशन ने झारखंड में 'सपना, बचत, उड़ान, आर्थिक बल, हर परिवार का हक' नामक मल्टी मीडिया पहल की शुरूआत की। यह वैश्विक कार्यक्रम 'ड्रीम, सेव, डू : फाइनेंशियल एम्पावारमेंट फॉर फैमिलीज' का भारतीय रूपांतर है। पीएनबी मेटलाइफ के सीईओ एवं प्रबंध निदेशक तरूण चुग के अनुसार इस पहल के तहत, वित्तीय सशक्तिकरण के लिए भाषा एवं रणनीतियां प्रदान करने के लिए, एसडब्ल्यूआई ने हाल में आकाशवाणी के उदयपुर केन्द्र से 1125 किलोहर्त्ज पर गली, गली सिम सिम नामक रेडियो शो का प्रसारण शुरू किया है। पांच मिनट के इन रेडियो धारावाहिक में बच्चे अपने पसंदीदा पात्रों - चमकी, गुगली और ग्रोवर को योजना, बचत, सपने देखने और आकांक्षाएं जैसे विषयों के बारे में चर्चा करते हुए सुनते हैं। श्रोता इन रेडियो एपिसोड को हर मंगलवार एवं बुधवार को आकाशवाणी के उदयपुर केन्द्र पर शाम को 7.10 बजे सुन सकते हैं। इसका पुन: प्रसारण हर शनिवार और रविवार को रात 8.15 बजे होता है। श्रोता टोल फ्री नम्बर 07966217981 पर गतिविधियों के बारे में अपनी राय दे सकते हैं और घर पर बच्चों के साथ करने वाली गतिविधियों को भी सुन सकते हैं। सेस्मे वर्कशाप इन इंडिया की प्रबंध निदेशक साश्वती बनर्जी ने कहा कि इन रेडियो एपीसोड का उद्देश्य खर्च करने, बचत करने, साझा करने तथा वित्तीय एवं गैर वित्तीय लक्ष्यों को हासिल करने में माता- पिता और बच्चों के बीच बातचीत को बढ़ाना और उन्हें उनके वित्तीय और गैर वित्तीय लक्ष्यों का अहसास कराना है। इन एपीसोड में चमकी, गुगली, इमो, ग्रोवर, कूकी मौंस्टर और बूम्बाह रोज-मर्रे की गतिविधियों के बारे में बातचीत करते हैं जिससे बच्चों को योजना बनाने, प्राथमिकताएं तय करने तथा स्वयं निगरानी जैसे कौशल सीखने में मदद मिलेगी। रेडियो एपिसोड को सपना, बचत, उड़ान जैसी पहल के संदेशों के साथ जोड़ा गया है जो वित्तीय सशक्तिकरण की नींव रखने में मदद करता है। ड्रीम, सेव, डू इस समय डूंगरपुर जिले में चल रहा है। यह पहल कार्यान्वयन सहयोगी - जन शिक्षा एवं विकास संगठन के सहयोग से आयोजित होने वाली विभिन्न कार्यशालाओं तथा गतिविधियों के जरिए 20,000 से ज्यादा महिलाओं और बच्चों तक पहुँचेगी।

सोजतिया क्लासेज ने इतिहास रचा

उदयपुर। दुर्गा नर्सरी रोड़ स्थित सोजतिया कॉम्पिटिशन क्लासेज ने विद्यार्थियों के चयन में फिर एक बार इतिहास रचा है। राजस्थान लोकसभा आयोग द्वारा घोषित कनिष्ठ लेखाकार के परिणामों में सम्पूर्ण राजस्थान में 4 रैंक सहित कुल सत्तयानवें (94) चयन हुए है। संस्थान के निदेशक डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने बताया कि उदयपुर संभाग के इतिहास में यह परिणाम नये आयामों को लेकर आया है। उदयपुर संभाग के अलावा भीलवाड़ा, पाली, जोधपुर, झुंझुनु से भी छात्र जूनियर अकाउन्टेट की तैयार के लिए सोजतिया में आए। सोजतिया कॉम्पिटिशन क्लासेज से 4 रैंक का आना यह निर्देशित करता है कि विद्यार्थियों की मेहनत, लगन एवं फेकल्टी टीम की मेहनत रंग लाई। डॉ. अनिता सोजतिया एवं भरतकुमार जोशी ने बताया कि विषय-विशेषज्ञ एवं उत्कृष्ट पठन-सामग्री विद्यार्थियों के चयन का आधार है।

'ओरल हैल्थ मंथ 2016' की घोषणा

उदयपुर। कोलगेट- पॉमोलिव (इंडिया) लि. ने इंडियन डेंटल एसोसिएशन (आईडीए) के साथ सहयोग में ओरल हेल्थ मंथ (ओएचएम) के 2016 एडिशन आरंभ किया है। अपने 13वें वर्ष में ओरल हेल्थ मंथ एक वार्षिक कार्यक्रम है जिसकी कोशिश लोगों को मौखिक सफाई व इसके फायदों के बारे में, और स्वस्थ मौखिक आदतों को उत्साहित करने के बारे में ज्ञान देना है। कोलगेट- पॉमोलिव (इंडिया) लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर इस्साम बचालानी ने कहा कि ताजा कंज्युमर यूसेज और एटिट्यूड स्टडी (सीयुएएस 2016) रिपोर्ट से यह तत्व सामने आया है कि पिछले वर्षों में जनसंख्या के एक तिहाई हिस्से से भी कम लोग दंत चिकित्सक (डेंटिस्ट) के पास गए हैं। कोलगेट- पॉमोलिव (इंडिया) लि. इंडियन डेंटल एसोसिएशन के साथ सहयोग में उपभोगताओं को अपने रोजाना जीवन में स्वस्थ मौखिक सफाई रखने के लिए प्रेरित कर रहा है।

किडनी के कैन्सर से दिलाई निजात

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल के किडनी केयर विभाग द्वारा गरीब और भामाशाह योजना के मरीजों को विश्वस्तरीय सुविधा के साथ सुपर स्पेशियलिटी सेवा सुलभ कराई जा रही है। कांकरोली, राजसमन्द निवासी 62 बर्षीय गोकुल सिंह पिछले कई महिनों से बांए अण्डकोष में सूजन और पेट मे दर्द के चलते परेशान था। परिवार के लोगों ने उसे कई डॉक्टरो को दिखाया लेकिन सभी ने किडनी में स्टोन और सूजन के चलते दवाइयों से सही होने कि बात कही।

दवाइयां लेने के बाद भी जब मरीज को फायदा नहीं मिला तो परिजन उसे पीएमसीएच लेकर आए। जांच में मरीज के बायी किडनी में कैन्सर का पता चला जो कि एडवांस किडनी कैन्सर था और रक्त की बडी शिरा में भी जा चुका था। इसके चलते मरीज का ऑपरेशन करना जरूरी था।

इस पर यूरोलॉजिस्ट एवं रिकन्स्ट्रक्शनल सर्जन डॉ. हनुवन्तसिंह राठौड़, डॉ. अभिषेक लढढा, सर्जरी विभाग के डॉ. के. सी. व्यास, डॉ. गौरव वधावन, एनेस्थेटिक डॉ.प्रकाश औदित्य, डॉ. कोमल एवं अजय चौधरी की टीम ने मात्र 80 मिनिट में सफल ऑपरेशन को अंजाम दिया। डॉ. हनुवन्त सिंह ने बताया कि मरीज के गुर्दे का एडवांस कैन्सर था अगर मरीज को कुछ महिनों तक अगर इसका पता नहीं चलता तो उसकी जान भी जा सकती थी। इस ब्लडलैस ऑपरेशन में एडवांस ऐर्नजी तकनीक लिगाश्योर का उपयोग किया गया।

वह भलमनई

-डॉ. विद्याविंदुसिंह

वह भलमनई है।
चुपचाप सह लेता है अपमान,
उपेक्षा, बेदर्दी
नहीं किसी से कहता दर्द,
क्षोभ अपना
अपनी आकांक्षा, आशा, अपेक्षा।
वह सबके लिए जीता है।
सबकी नींद सोता है, जगता है
सब उसे जगा देते हैं
वह किसी को नहीं जगाता
सबकी भूख प्यास की चिंता करता है।
रूखा-सूखा, बचा-खुचा खा लेता है।
नहीं बताता किसी से
अपनी भूख, प्यास, स्वाद, जरूरत
सबकुछ मन में,
मुख में ढाँक तोपकर रखता है।
कहीं इज्जत की पोल न खुल जाये।
वह भोंदू, बेवकूफ की उपाधियाँ
पीठ पर झेलता है
चुप रहते हुए कसमसाता है।
उसपर सबका हक पर
वह किसी पर हक नहीं रखता।
वह भलमनई है अपनों के मुख से
यह सुनने को तरसता हुआ
विदा हो जाता है।
रह जाती है उसकी भलमनसाहत
कि शायद लोग उसकी चर्चा करेंगे।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधानक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

डॉ. प्रभाकर माचवे ने मेरी.....

(पृष्ठ दो का शेष)

उन्होंने मुझे राजस्थानी स्तंभ लिखने को कहा। फलस्वरूप जून से ही मैंने उसमें लिखना शुरू कर दिया। इस स्तंभ का उन्होंने 'भाषा भगिनी राजस्थानी' नाम दिया।

उदयपुर में मेरी और डॉ. विश्वंभर व्यास के साथ उनसे बड़ी लंबी देर तक साहित्यिक गप्पबाजी चलती रही। इसी बीच प्रसंग चल पड़ा यहां रह रहे मुनि कांतिसागरजी का। डॉ. माचवे ने कहा कि संध्या को उन्होंने मुझे अपने निवास भोजन पर बुलाया है। मैंने कहा कि भूपालपुरा में उनके निवास पर मेरा अक्सर जाना होता रहता है। उनके वहां एक नेमप्लेट भी लगी हुई है- डॉ. मुनि कांतिसागर नाम की। यह सुन वे तपाक से बोले - ''अच्छा, वैसे वे पीएच.डी. तो हैं नहीं पर किसी ने लगादी होगी। मेरा उनका बड़ा पुराना और कई तरह के खट्टे-मीठे चस्कों का संपर्क है। देखना, जब मैं जाऊंगा तब वह नेमप्लेट वहां लटकी नहीं मिलेगी।'' सुबह जब मेरा उनसे मिलना हुआ तो सबसे पहले उन्होंने यही कहा- कल मैंने ठीक ही कहा था। मुनिजी के वहां उनकी नेमप्लेट मुझे देखने को नहीं मिली।

यहां से चलकर माचवेजी थोड़े अस्वस्थ होगये लेकिन वे आबू की एक संगोष्ठी में गए। उस संगोष्ठी में मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत और भाभी डॉ. शांता भानावत भी सम्मिलित हुए। भाई साहब ने मुझे उनसे हुई जिंदादिली के बड़े रोचक किस्से सुनाए और वह पत्र भी दिखाया जो उन्होंने इंदौर से लिख भेजा। जून 21 सन् 1989 के उस काव्य पत्र में उन्होंने लिखा-

प्रिय नरेन्द्रजी,

नक्की लेक किनारे खाने गये दोसा / उन त्रिदोष बेलों में हो ही गया दोसा। अब मैं उसकी सुधि में हंसता हूं होकर मस्त / चिंता न करें, अब मैं हूं वैसा ही स्वस्थ।। एक भेजता हूं कतरन वह शायद हो ठीक/ बनी रहे यह मित्रता, यही हमारी सीख। श्रीमतीजी को आशीर्वाद।

सप्रेम - प्रभाकर माचवे

पत्र पाकर भाई साहब ने राहत की सांस ली और मुझे कहा कि यह अच्छा सकुन है कि माचवेजी अब उत्तरोत्तर स्वस्थ-मस्त होते जा रहे हैं लेकिन यह किसे मालूम था कि उनके ऊपर दुर्देव की गहरी छाया घनी काली और गंभीर होती जा रही है जो उन्हें पूरे छह माह भी ठीक से नहीं जीने देगी और अन्ततः वह 16 दिसंबर 1989 को ही हम सबसे ओझल कर देगी।

अपनी रचनाधर्मिता में सदैव क्रियाशील रहने वाले माचवेजी अपने लेखन में बड़े प्रयोगवादी रहे और उतने ही सबके प्रियवादी भी। वे जितने सहृदय, सहज, सरल थे, अपनेपन में उतने ही अक्खड़-फक्खड़ थे इसलिए उन जैसा यदि कोई और होता, तो न जाने कितना आकाश उठा लेता, कितने तारे हथिया लेता, पर उन्होंने साहित्य का सितारा रहना ही पसंद किया। यह सितारा उन दसों दिशा का न होकर शत-राहों का है जहां होने का अर्थ ही प्रभाकर होना है। ऐसे साहित्य के प्रभाकर माचवे को मेरी श्रद्धा प्रणति।

कुंवारे देश के आदिवासी .....

(पृष्ठ पांच का शेष)

इसीलिए ये गरासिये 'कुंवारे' और इनका देश 'कुंवारों का देश' कहलाता है / पूर्वज जहां कुलदेव होते हैं वहां इष्टदेव अलग होते हैं, जिनका उस गांव में सामूहिक देवरा होता है। यहां सारे गांव वाले पूछताछ के लिए आते हैं। यह पूछताछ जिस दिन बावसी की चौकी लगती है, उस दिन की जाती है। बावसी यानी देवता भोपे के डील (शरीर) में आते हैं / भयंकर से भयंकर दुखदर्दों, यातनाओं और कष्टों को सहन करते हुए भी अपनी नैसर्गिक जीवनधारा से परे नहीं होंगे। नाचगान के अवसरों पर उतने ही आनंद और उल्लासमग्न होते नजर आयेंगे और उसके माध्यम से अपना दुख हल्का करेंगे। वर्तमान अकाल ने जिस रूप में इन्हें प्रभावित किया उसका नजारा देखिये-

अंदर जमीं रूठी ने जंगल रूठिया / मंगरा रा भाटा तपिया पंखी उजड्या
पाणी बिण बाणी बंधगी बाछरू / ढांडा सोपाया जीणो छोरियो
हेड़पंपा रो पाणी सूखियो / कालो जो काल अकाल रो।

अर्थात् इन्द्रराज ! धरती और जंगल सब रूठ गए हैं। मगरों के पत्थर तप गये हैं। पक्षी उजड़ गये हैं। पानी के बिना बछड़ों की बोली रूक गई है। जानवरों ने जीना छोड़ दिया है। हैंडपंपों का पानी सूख गया है। अकाल का काल अधिक काला हुआ जा रहा है। उक्त उद्धरण डॉ. भानावत के गरासियों के जीवन और संस्कृति संबंधी इस अध्ययन के विषय-विस्तार का संकेत बखूबी देते हैं। लोक-संस्कृति का अध्ययन उनके लिए एक व्यावसायिक कर्म नहीं है। उसके प्रति जो उनमें गहरी आत्मीयता है, वह लेखन को मानवीय बंधुत्व की खोज से जोड़ देती है।

डॉ. भानावत के इस अध्ययन का एक पक्ष अवश्य प्रबुद्ध पाठक को कुछ क्षुब्ध करता है। वे लोकविश्वासों पर लिखते हुए जिज्ञासु भाव को छोड़कर उन विश्वासों से संबंधित अति-प्राकृत तत्वों को सिद्ध सचाइयों की तरह प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण प्रस्तुत है- ''जरा-जरा सी बात पर ज्योंही इनकी किसी से नाराजगी हो जाती है कि कामण कर दिया जाता है। इस कामण में किसी की फसल बांध दी जाती है, किसी की चरखी बांध दी जाती है.... चलते रस्ते ऐसे चमत्कार किसी भी गरासिया के लिए सामान्य घटना है। ..... पद-पद पर इन लोगों में जादू-मंतर, कामण-मूठ, टोने-टोटके का प्रचलन है। इसके कारण कभी भी कोई किसी का अनिष्ट करने में नहीं चूकता।'' स्पष्ट है कि लेखक न इन विश्वासों के पीछे जो सामाजिक मनोवैज्ञानिक कारण है उनकी पड़ताल करता है और न इसके बारे में सूचना देने के अपने सोधक-धर्म तक सीमित रहता है-वह तो इन्हें प्रमाणित तथ्यों के रूप में ही रखता है। यहां डॉ. भानावत लोकजीवन के अन्वेषक न रहकर तथा-कथित चमत्कारों के मोहान्ध (हिप्नोटाइज्ड) दर्शक भर रह जाते हैं।

- आकाशवाणी उदयपुर से 30 अगस्त 1983 को प्रसारित।

बदलाव के मोड़ पर श्रीनाथजी की नगरी

-सदाशिव श्रोत्रिय-

यदि मैं अपने नगर नाथद्वारा पर नज़र डालूं तो मैं पाता हूं कि महाप्रभु वल्लभाचार्य के वंशज यहां के वर्तमान गोस्वामी ही आज अधिकांशत: यहां के बजाय मुंबई में रहना पसंद करते हैं। यहां के मंदिर मंडल के मुख्य निष्पादन अधिकारी, यहां की शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्य, यहां के चिकित्सालयों के प्रभारी और यहां के एसडीएम, पुलिस उपअधीक्षक, थानेदार आदि पदों पर नियुक्त पदाधिकारी भी थोड़ी-थोड़ी अवधि में यहां से स्थानान्तरित होते रहे हैं।

शिक्षा, राजनीति, खेल, कला, पत्रकारिता या किसी अन्य क्षेत्र में यहां के प्रतिभाशाली लोग भी अब यहां के बजाय उदयपुर, जयपुर, दिल्ली, अहमदाबाद, सूरत या मुंबई जैसे किसी बड़े शहर में रहना पसंद करते हैं। इस नगर के विकास पर नज़र डालने पर मैं पता हूं कि यहां स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद आदर्शनगर, गिरधरनगर या श्रीजी कॉलोनी जैसी जो नई बस्तियां विकसित हुईं उनमें से किसी में सार्वजनिक उपयोग के लिए कोई ज़मीन नहीं छोड़ी गई। इन नई बस्तियों में आप सार्वजनिक उद्यान या सामुदायिक भवन के नाम पर एक वर्ग फुट जगह भी नहीं पाएंगे। पिछले 40-50 के दौरान बनी इन नई बस्तियों की भीतरी सड़कें इतनी बेतरतीब और संकड़ी हैं कि आप एक छोटी सी कार भी इनमें से होकर नहीं निकाल सकते। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि इस तरह की नई बस्तियों के नक्शे एक नई बस्ती की आवश्यक शर्तों को पूरी किए बगैर ही पास हो गए?

श्रीनाथजी के दर्शन के नाम पर यहां आने वाले पर्यटकों को आवास व भोजन की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए नाथद्वारा के साधारण व्यवसायियों से अधिक निवेश यहां के होटलों, रेस्तराओं, अतिथि-गृहों आदि में नाथद्वारा से बाहर के पूंजीपतियों ने किया है और यहां के आम नागरिकों को बहुत सी हरियाली, शांति और खुली जगहों से वंचित कर दिया है। गुजरात के बहुत से जाति-समुदायों के लोगों ने ऊंचे दामों पर नाथद्वारा की बहुत सी कृषि भूमि खरीद कर उन पर अपने-अपने अतिथि-गृह बना लिए हैं। श्रीनाथजी की नियमित सेवा के लिए जिन सेवकों को कभी मंदिर के आसपास ही बसाया गया था उन्हें अब आवास के लिए मंदिर से दूर खदेड़ दिया गया है और उनकी जगह होटल आदि खड़े कर लिए गए हैं।

नवनिर्मित फोरलेन वाली सड़क को नगर के बीच से गुज़ार कर यहां के वर्तमान भाग्यविधाताओं ने इस नगर की असुरक्षा और इसके पर्यावरण-प्रदूषण में भी ज़बरदस्त वृद्धि कर दी है। यहां के नागरिकों को विभिन्न त्यौहारों और उत्सवों पर पीढ़ियों से आनंद देते आ रहे बाग-बगीचों की शोभा, हरियाली और खुलापन भी अब उन्हें नि:शुल्क उपलब्ध नहीं रह गया है। यहां के सिंहाड़ और नाथूवास के विस्तृत जलाशयों के बहुत से भाग पर व्यावसायिक स्वार्थों ने लोगों के देखते देखते अतिक्रमण कर लिया है। धीरे धीरे यह नगर यहां के निवासियों के हाथों से निकलकर उन बाहरी व्यापारियों की संपत्ति बनता जा रहा है जिनका इस नगर से कोई लगाव या स्थाई सरोकार नहीं है।

शिक्षा, चिकित्सा आदि की जो सुविधाएं पहले यहां के नागरिकों को नगर-परिसर में ही लगभग नि:शुल्क उपलब्ध थीं वे भी अब धीरे धीरे उनसे छिनती जा रही हैं। साधारण स्थिति के नाथद्वारावासी के लिए, जो अब भी किसी तरह का कोई छोटा-मोटा काम करके जैसे- तैसे अपने और अपने परिवार का गुज़ारा करता है, जीवन की गुणवत्ता में कोई फ़र्क नहीं आया है।

उसके लिए नाथद्वारा के मोहल्ले वही हैं जिनमें शौचालयों का मल पानी के साथ खुली नालियों में बहा दिया जाता है जिसके फलस्वरूप इन मोहल्लों की गलियां बदबू से भरी रहती हैं। इन नागरिकों को पिछले पच्चीस वर्षों से नगरपालिका आश्वासन दे रही है कि शीघ्र ही इस नगर की सारी गन्दगी बहाने के लिए एक सीवरेज लाइन बन जाएगी पर उस काम को आज तक किसी ने गंभीरतापूर्वक पूरा कराने की चेष्टा नहीं की है।

विकास के नाम पर आज भी इस नगर में केवल वे काम हो रहे हैं जिससे बाहर से आने वालों को या यहां के समृद्ध लोगों को लाभ हो ; किन्तु जो वंचित है वह अब पहले से भी अधिक वंचित होता जा रहा है। जिस सरकारी अस्पताल में पहले वह पैदल जा सकता था उसे अब नगर से इतना दूर कर दिया गया है कि किसी दुर्घटना या आकस्मिकता की स्थिति में वहां तक जाते जाते ही किसी ग़रीब का प्राणांत हो जाएगा। अपने इलाज के लिए वहां जाने के लिए अब ग़रीब लोगों को भी किसी ऑटो रिक्शा पर कम से कम 30-40 रुपए खर्च करने पड़ते हैं। परेशानी और वक्त की बरबादी से बचने के लिए वह अब अक्सर सरकारी अस्पताल के बजाय पास के ही किसी निजी चिकित्सक के पास चला जाता है जिसका परामर्श शुल्क उसे हर बार बढ़ा हुआ मिलता है। उसे उपलब्ध बाग-बगीचे और खेल-मैदान उससे छीन लिए गए हैं। जो पहले से समृद्ध थे वे ही नाथद्वारा के इस 'विकास' के फलस्वरूप और अधिक समृद्ध हुए हैं। जिनके पास पहले ही कम था उनसे अब वह कम भी छीना जा रहा है। यह कितना अन्यायपूर्ण है कि इस नई व्यवस्था में इस नगर में भी अमीर और अधिक अमीर तथा ग़रीब और अधिक ग़रीब होते जा रहे हैं।

न केवल नाथद्वारा का प्राकृतिक पर्यावरण इस नगर के तथाकथित विकास की भेंट चढ़ गया है, इसका सांस्कृतिक वातावरण भी अब पहले की तुलना में काफ़ी प्रदूषित हो गया है। नाथद्वारा का सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण स्वतंत्रता-प्राप्ति से पूर्व ऐसा था कि वह हर तीर्थयात्री को भौतिकता से दूर और आत्मिक उन्नित की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता था। आत्मिक उन्नित के लिए अनुकूलता के इस नगर के उस वातावरण को अब धीरे धीरे पूरी तरह नष्ट कर दिया गया है।

यहां आने वाला तीर्थ यात्री जो वस्तुत: अब केवल एक पर्यटक रह गया है अपनी भौतिक चमक-दमक वाली दुनिया से दूर न आकर अब केवल वैसी ही भौतिक चमक-दमक वाली दूसरी दुनिया में आता है जहां कुछ भी उसकी भौतिकवादी दुनिया से भिन्न नहीं है। पुष्टिमार्गीय वैष्णव दृष्टि से देखने पर भी नाथद्वारा में होने वाले परिवर्तनों की दिशा विकास की सही दिशा नहीं कही जा सकती।

इस दृष्टि से देखा जाए तो नाथद्वारा में कोई भी भवन स्थापत्य में श्रीनाथजी मंदिर से अधिक भव्य,आकर्षक और महत्वपूर्ण नहीं लगना चाहिए पर आज यदि किसी अनजान यात्री से पूछा जाए कि वह नाथद्वारा के भवनों को सुन्दर स्थापत्य की दृष्टि से देखकर बताए कि श्रीनाथजी का मंदिर कौन सा होना चाहिए तो वह शायद नवनिर्मित वल्लभविलास के भवन को श्रीनाथजी मंदिर की तुलना में अधिक भव्य और आकर्षक बताएगा। पहले जब लोग श्रीनाथजी को ही नाथद्वारा का वास्तविक स्वामी मानते थे तब ऐसा होना संभव नहीं था। यह इस बात को साबित करता है कि आज वैष्णव भक्ति के नाम पर नाथद्वारा आने वाले लोगों को भी श्रीनाथजी के सुख और वैभव-प्रदर्शन से ज्यादा चिंता अपने स्वयं के सुख और वैभव-प्रदर्शन की है। इसीलिए यहां के अख़बार आए दिन उन महत्वपूर्ण लोगों के नाम छापने में ज्यादा रुचि दिखाते हैं जो उनकी समझ में यहां दर्शन करने आकर संभवत: श्रीनाथजी को कृतार्थ करते हैं।

श्रीनाथजी के प्रति समर्पण और भक्तिभाव में कमी का अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि पिछली सदी के प्रारंभ में हरी-भरी लताओं, फव्वारों और चांदी के काम वाले कलात्मक किवाड़ों से सज्जित नवनीतप्रियजी मंदिर के समीप का जो छोटा बगीचा एक गुजराती वैष्णव भक्त ने प्रभु के सुख के लिए भेंट किया था जैसा कि उसके बाहर के शिलालेख से अब भी प्रकट है उसे उन लताओं, फव्वारों और चांदी के काम वाले किवाड़ों का हरण करके अब दर्शनार्थियों के साधारण निकास-मार्ग में तब्दील कर दिया गया है। वह वैष्णव जो पहले अपने प्रभु की खातिर घंटों तक भीड़ में खड़ा रहकर दर्शन के लिए प्रतीक्षा कर सकता था। अब जल्द से जल्द दर्शन का काम निबटा कर उदयपुर निकल जाना चाहता है या वल्लभ-विलास के अपने महंगे वातानुकूलित स्वीट में जाकर आराम करना चाहता है।

आज लालबाग को देखकर किसी को उसके श्रीनाथजी के लीलाकुंज होने से अधिक आभास उसके एक शहरी जोगर्स पार्क होने का होता है। इसी तरह बड़े मगरे के परिक्रमा मार्ग में जो परिवर्तन किए गए हैं वे मेरी समझ में किसी पैदल परिक्रमा करने वाले वैष्णव की भावनाओं या आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कम और फ़र्राटे से अपनी कार में परिक्रमा करने वाले लोगों की सुविधाओं और ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए अधिक किए गए हैं। जो बातें मैंने ऊपर अपने नगर नाथद्वारा के सम्बन्ध में कहीं हैं उन्हीं को आज थोड़े-बहुत अंतर के साथ हमारे हर गांव-कस्बे पर लागू किया जा सकता है।

आज की परिस्थितियों में आवश्यकता शायद इस बात की है कि हर नगर में स्थाई रूप से निवास करने वाले कुछ ऐसे विश्वसनीय, निस्वार्थ, पढ़े-लिख, अनुभवी, जानकार और सत्ता के लोभ से दूर रहते हुए उस नगर से वास्तव में प्रेम करने वाले लोगों को चिन्हित किया जाए और उन लोगों की किसी ऐसी परिषद् का गठन किया जाए जो उस नगर के विकास और परिवर्तनों पर बराबर अपनी निगाह रख कर उनका आकलन कर सके।

इस परिषद् को किसी जनतांत्रिक पद्धित से उस नगर की हर गतिविधि और उसमें किए जाने वाले हर परिवर्तन को नियंत्रित करने और उस पर अंकुश लगाने का भी पर्याप्त अधिकार प्राप्त होना चाहिए। अधिकाधिक आर्थिक लाभ और मुनाफाखोरी का जो भूत आज हर आदमी पर सवार हो गया है उसे देखते हुए किसी ऐसी स्थाई परिषद् के अभाव में आज किसी नगर के वास्तविक कल्याण और उसके दीर्घकालीन विकास की बात शायद सोची ही नहीं जा सकती।

-पण्डित चतुरलाल स्मृति शास्त्रीय संगीत संध्या 'स्मृतियां' का आयोजन-

सरोद पर जुगलबंदी और बांसुरी, सेक्सोफोन तथा तबले पर तिकडी ने मन हर्षाया

उदयपुर। उदयपुर में जन्में प्रख्यात तबला वादक पं. चतुरलाल की स्मृति में पं. चतुरलाल मेमोरियल सोसायटी नई दिल्ली एवं वेदान्ता, हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को शिल्पग्राम में शास्त्रीय संगीत संध्या 'स्मृतियां' का आयोजन किया गया।

संगीत संध्या की शुरूआत में प्रख्यात सरोद वादक अमजद अली के पुत्र अमान और अयान अली बंगश ने सरोद पर अपनी जुगलबंदी से श्रोताओं को रस विभोर कर दिया। शिल्पग्राम के मुक्ताकाशी रंगमंच पर बंगेश बंधुओं ने सरोद पर जमकर सुरवर्षा की। इनके साथ तबले पर पं. चतुरलाल के पौत्र प्रांशु चतुरलाल और पखावज पर फतहसिंह गंगानी ने संगत की। राग झंझोती और रागेश्वरी में प्रस्तुत यह बंदिश जप ताल एवं तीन ताल में निबद्ध थी।इसके बाद प्रख्यात बांसुरी वादक रोनू मजुमदार ने बांसुरी के कंठ खोले तो उनका अनुभव मुखर हो उठा। इनके साथ अमेरिका के प्रसिद्ध सेक्सोफोनिष्ट जोर्ज ब्रुक्स ने सेक्सोफोन एवं प्रांशु चतुरलाल ने तबला, दरबुका और ड्रम्स पर संगत की। अपनी प्रस्तुति का आगाज उन्होंने राग यमन कल्याण से किया। यह बंदिश तीन ताल में निबद्ध थी। इस तिकड़ी ने इस राग की अवतारणा में विविध तानों का समावेश कर खूबसूरत तिहाइयों के साथ सम का दर्शाव किया। बांसुरी, सेक्सोफोन और तबले पर जुगलबंदी को आगे बढ़ाते हुए बहुप्रचलित गीत पुरीया धनाश्री, हंसध्वनी,गावति एवं झंझोती का मिश्रण प्रस्तुत किया।

प्रारंभ में पंडित चतुरलाल के पुत्र चरनजीत लाल, मीता लाल, हिन्दुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल, वोलकेम इंडिया के चैयरमेन अरविंद सिंघल, चीफ कमिश्नर इनकम टैक्स नीना कुमार, ईकनेक्ट के मनोज अग्रवाल, रमाडा की चैयरमेन डोली तलदार, पं. चतुरलाल सोसायटी के चैयरमेन डॉ. पीसी जैन ने कलाकारों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। संचालन पं. चरनजीत की पुत्री श्रुति लाल ने किया। इस वर्ष कार्यक्रम के सह सहयोगी आरएसएमएम एवं रमाडा उदयपुर रिसोर्ट एण्ड स्पा तथा पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र थे।

पं. चरनजीत ने बताया सोसायटी लगातार 'स्मृतियां' नामक कार्यक्रम उदयपुर में आयोजित करती आ रही है। इसके तहत अब तक पं. हरिप्रसाद चौरसिया (बांसूरी), पं. शिवकुमार शर्मा (संतूर), पं. जसराज (गायन), उस्ताद अमजद अली खां (सरोज), उस्ताद जाकिर हुसैन (तबला), पं. राजन साजन मिश्रा (गायन), कद्री गोपालनाथ (सेक्सोफोन), पं. रोनू मजुमदार (बांसुरी), प्रांशु चतुरलाल (तबला), राहुल शर्मा (संतुर), गुन्देचा बन्धु (गायन), उस्ताद सुजात हुसैन खां (सितार), शूबेन्द्रो राय (सितार) श्रीमती शासकीया राव दी हास (चैलो), मालाश्री (गायन) जैसे वरिष्ठ संगीतज्ञों के सामूहिक वादन के कार्यक्रम आयोजित कर चुकी है।

मन शुद्धिकरण शास्त्रीय संगीत से

प्रख्यात बासुरी वादक रोनू मजुमदार ने कहा कि मन और आत्मा की शुद्धि के लिये शास्त्रीय संगीत महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय मे शास्त्रीय संगीत बहुत बेहतर स्थिति में है, शिक्षण संस्थानों में शास्त्रीय संगीत का प्रचलन सराहनीय है। मजुमदार ने कहा कि उन्हें बॉलीवुड से कोई शिकायत नही है जहा शास्त्रीय संगीत गीता की तरह है वही तेज संगीत फास्टफुड की तरह है। शास्त्रीय संगीत के श्रोता कभी कम नही होंगे। तनाव भरे जीवन में शास्त्रीय संगीत सुकून देता है। रियलिटी शो में आने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को शास्त्रीय संगीत सिखना चाहिए ताकि वे अपनी प्रस्तुति को बेहतर बना सके। शास्त्रीय संगीत मन के विकास और व्यक्तित्व निखार के लिये आवश्यक है।

ओडिसी नृत्यांगना शुभदा के नृत्य ने मोहा

उदयपुर। कार्तिक पूर्णिमा के उपलक्ष्य में सोमवार को माणक चौक में एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के तत्वावधान में प्रसिद्ध ओडिसी नृत्यांगना गुरू शुभदा वरदकर द्वारा ब्रह्मा की आराधना में नृत्य श्रृंखला प्रकृति नर्तन का भाव-विभोर प्रदर्शन किया गया। एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ लेक पैलेस होटल्स एवं मोटल्स उदयपुर के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक अरविन्दसिंह मेवाड़ ने दीप प्रज्वलित कर किया।

एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर के जनरल मैनेजर ग्रुप ऑपरेशन आदित्यवीर सिंह ने बताया कि महोत्सव की मुख्य कलाकार ओडिसा की प्रसिद्ध कलाकार गुरू शुभदा वरदकर ने अपने साथी कलाकारों के साथ भारतीय शास्त्रीय नृत्य की ओडिसा शैली में प्रकृति नर्तन की श्रृंखला प्रस्तुत की। ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर और बसंत ऋतु को प्रकृति और मनुष्य के बीच अंतर्मन के बेहद ही भाव भंगिमाओं की पूर्ण अदाओं में प्रस्तुत किया। इनके साथ ओडिसी नृत्य एवं वादन में मिताली वरदकर, श्रेया साबरवाल, अत्रीय चौधरी, अनाया ए श्रींगरपुर, सुष्मना बिलोरे एवं ध्रुवी हयन ने संगत की। कार्यक्रम की संयोजक मुंबई की नीरू साबरवाल थी। संचालन मोहिता दीक्षित ने किया।

वोडाफोन द्वारा 4जी सिम अपग्रेड की शुरूआत

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया दुनिया के सबसे बड़े 4जी नेटवर्क को राजस्थान में लाने के अंतिम चरण में प्रवेश कर गया है। कम्पनी ने घोषणा की है कि इसके उपभोक्ताओं के लिए 4जी सिम राज्य के सभी वोडाफोन स्टोर्स, वोडाफोन मिनी स्टोर्स और मल्टीब्राण्ड आउटलेट्स में उपलब्ध होंगे। राजस्थान में वोडाफोन के सभी उपभोक्ता अपने मौजूदा सिम को 4जी रेडी सिम से बदल सकते हैं।

वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि 4जी रेडी सिम की एक्सचेंज सेवा को सुगम एवं निर्बाध बनाने के लिए इन्हें राजस्थान में वोडाफोन 4जी सेवाओं के कॉमर्शियल लॉन्च से पहले ही उपलब्ध कराया जा रहा है। उम्मीद है कि जल्द ही लॉन्च के बारे में औपचारिक घोषणा की जाएगी। 4जी सेवाओं का लाभ उठाने के लिए उपभोक्ता के पास 4जी इनेबल्ड हैण्डसैट और एक नया 4जी रेडी सिम कार्ड होना चाहिए। उपभोक्ता अपने नज़दीकी वोडाफोन स्टोर, वोडाफोन मिनी स्टोर और मल्टीब्राण्ड आउटलेट्स पर जाकर बड़ी आसानी से एक्सचेंज प्रक्रिया के द्वारा अपना 4जी रेडी सिम नि:शुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

कान्यो मान्यो

जीवणो आपणी धरती माथे ई

खाट पर टांग पर टांग धरे कान्यो ऊंट की तरह उबासी ले रहा था कि मान्यो ने प्रवेश किया। इशारा पाकर वह पलंग पर करीने से बैठ गया। मान्यो सप्ताह भर विदेश अपने सहपाठियों से मिलने गया था। लौटा तो उसका मिजाज बदला पाकर कान्यो बोला- हवा गाड़ी से आया दीखता है। बोली में भी हमतम हो गया है। हमारे लिए क्या लाया है?

मान्यो ने शीशी निकाल कर दी। बोला- यह डीओ है। इसे छांटने से पसीना नहीं आता है। कान्यो ने उसे इधर-उधर ऊंचे-नीचे देखा। बोला- पसीना तो जरूरी है। शरीर री आखी गन्दगी बारै आ जावे। आपां धरती रा बेटा हां। काम करां ने पसीनो लावां तो आपणी बलिहारी है अर तू लगड़ीका विदेश जार या शीशी लायो। अरे अठारी खशबू रो एक फूंबो कान में मेल ने बारे निकले तो आखा वातावरण में तरावट आ जावे। मान्यो बोला- जदीऊं आयो, म्हारो मन नी लागरियो है। सगला सैपाठी विदेश में है। अठे इजत नी है। या सुणतांई कान्यो ने आव परो गुस्सो।

खाट ने चड़ड़ बोला र उठ्यो ने आंख्यां रा भांपण खेंच बोल्यो- कचमाद्या चार दन विदेश जार आयो तो करगेट्या ज्यूं रंग बदलग्यो। थारी दस पींडी रो अणी भौम सूं लगाव है। सगा-समधी, नाता-रिश्ता, पाड़-पड़ोसी, आपणा-पराया सुख-दुख में काम आवे। पईसो ट्क्को हाथ रो मेल है। यो मो-मरजी नी राखे। वठे थारे कुण है।

ओछी वगत सब आंख बदल दे। अठै आखो गाम है। चीड़ा-चीड़ी चहकै। भमरा गुंजार दे। गायां रंभावे। टेटा टेंटावे। मनक्यां मुंडा धोवे। माख्यां भन्नावे। रामजी का घोड़ा दरसण दे। थारे मां-बाप अठे। बेन-भाई अठे, चाचा-भतीजा, नाना-नानी, दादा-दादी, ब्याई-सग्गा, खेत-कुड़ा, ढांडा-चोपा सब अठे। वठे बाबाजी रो हींठ एकल-खोर्यो बण जीवा में कई मजो है।

मान्यो छानोमानो सुणातो र्यो। बोले तो कई बोले। कान्यो लपकायो- अठे सरवण वियो। आंधा मां-बाप ने कावड़ में खांदे ले गाम-गाम गुमाया। तीरथां-तीरथां दरसण कराया। सरवण पूत केवाया। वांरो नाम अम्मर वियो। अतराक में कान्यो, देखे, वो सुबक-सुबक आंसुड़ा ढरकावा लागग्यो। पाणी-पाणी वे ग्यो। कान्या री छातीऊं काठो लपक बोल्यो- थें म्हारी आंख्यां खोल दीधी। म्हारे हिवड़ा मांय तीजी आंख उग आई। आपणी धरती अर आपणा लोग सिवा जीणो विरथा है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।